वर्ष 28, अंक 10 अक्तूबर-2026 ₹ 3/-

हर घर में हिन्दी, हर मन में हिन्दी

SHABARI SALEM

ज्ञानात् परं सुखम्

शबरी

Shabari Siksha Samachar शिक्षा समाचार

तमिलनाडु के सेलम जिले से पिछले 28 वर्षों से बिना किसी अनुदान के निरंतर प्रकाशित होनेवाली, एकमात्र हिन्दी मासिक पत्रिका है।

द्वितीय विद्या उत्सव 2026 सम्पन्न

शबरी शिक्षा संस्थान, सेलम

सेलम, तमिलनाडु । शबरी शिक्षा संस्थान द्वारा जयराम कॉलेज के भुवना ऑडिटोरियम में **द्वितीय विद्या उत्सव** 27 सितम्बर 2026, रविवार को बड़े धूमधाम से मनाया गया ।

संस्थान द्वारा संचालित वाणी विकास परीक्षा के आठों स्तरों में उत्तीर्ण लगभग 500 छात्रों को **'शबरी हिन्दी वाणीधर सम्मान–2026'** से सम्मानित किया गया ।

मुख्य अतिथि के रूप में दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, तिरुच्ची के द्वितीय उपाध्यक्ष श्री पी. सुब्रह्मण्यम, मदुरै ने छात्रों का उत्साहवर्धन किया । उन्होंने कहा, ''विद्या विनय प्रदान करती है और विनय ही विजय का कारण बनती है ।'' विशिष्ट अतिथि जयराम पब्लिक स्कूल के प्रधानाचार्य श्री पॉल फ्रांसिस ज़ेवियर ने उत्सव की शोभा बढ़ाई ।

विद्या उत्सव 2026 संस्थान के अध्यक्ष श्री एम. वेंकटेश्वरन की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ । स्वागत भाषण कु. लक्षिता श्रीधर ने दिया, जबकि संस्थापक श्री एम. श्रीधर ने संस्थान की सेवाओं का विस्तार से वर्णन किया । कार्यक्रम का संचालन प्रधान सचिव श्री आर.जे. संतोष कुमार ने किया तथा धन्यवाद ज्ञापन कोषाध्यक्ष श्री एस. विजय मुकेश ने किया ।

उत्सव का शुभारम्भ तमिल ताई वाऴ्त्तु, वन्दे मातरम् और गणपति स्तुति से हुआ तथा राष्ट्रगान के साथ इसका समापन हुआ । सम्मानित छात्रों, हिन्दी प्रचारकों और अभिभावकों ने कहा कि यह विद्या उत्सव वास्तव में विजयोत्सव है, जो 'हर घर में हिन्दी और हर मन में हिन्दी' के लक्ष्य को साकार करता है ।

इस अंक में

अनमोल वचन 6
संपादक की कलम से 7
लगाम 8
कौन हो तुम ? 10
आराम का नशा.................... 11
विश्वात्मा 12
उनमें अब दीवार 13
रात निखरी चाँद खिला... 14
तुम्हारा क्या है ? 15
ग़ज़ल 16
कर 16
परिश्रम का प्रभाव 17
कृष्ण कन्हैया 18
मनहरण घनाक्षरी ईश-भाव....... 18
ज़िंदगी एक राह, सीखने की चाह 19
धीरे बोल 19
भारत 20
मुकरियाँ 20
ग़ज़ल............................ 21
आओ मोहन..................... 22
बापू के बंदर 22
दुनिया 23
इंद्रबिजय सवैया.................. 23
प्यार का इतजार 24
विष और अमृत 25
महान संत शिव भक्त-तमिल नायनमार 28
उन संबंधों को बटोर कर क्या होगा 30
नदी में आकाश.................. 30
अखियन ही अखियन में भोले ... 31
मिट्टी से भी तू यारी रख 31
मातृभूमि 32
फूल सरीखे बच्चे 32
आँसू बना सैलाब 33
डर................................ 33
उस दिन उनको क्या देगा रे ? ... 34
प्रिये क्या सम्बन्ध है............. 34
पीडा का प्रतिरोध 35
घनाक्षरी 35
धूप-छाँव 36
सृजन का मूल 36
उत्थान हुआ है हिन्दी का ।...... 37
एक पेड़ माँ के नाम.............. 37
प्रभु की लीला अपरंपार 38
जीत सकते हो... 38
हरा भरा मौसम है 39
जय हिन्दी, पढ़ो अंग्रेज़ी ! 40
पाठकों के पत्र 41
नवांकुर 43
पठितम्, अभिरुचितम्, अनूदितम्. 44
தமிழமுது 46
அருள் உலா 47

வாணிவிகாஸ் வாய்மொழித் தேர்வு விவரம்

தேர்வு நடைபெறும் மாதம்	தேர்வு நடைபெறும் தேதி	தேர்வு விண்ணப்பங்கள் வழங்கும் நாள் கடைசி தேதி	₹10/- தாமதக் கட்டணத்துடன் செலுத்த
அக்டோபர்-2026	25-10-2026	01-07-2026 to 31-08-2026	05-09-2026
ஜனவரி-2027	24-01-2027	01-10-2026 to 30-11-2026	05-12-2026
ஏப்ரல்-2027	18-04-2027	01-01-2027 to 28-02-2027	05-03-2027
ஜூலை-2027	18-07-2027	01-04-2027 to 31-05-2027	05-06-2027

வாணி விகாஸ் தேர்வுகளுக்குரிய விண்ணப்பங்கள் ஆன்லைன் (ONLINE) வாயிலாக மட்டுமே (https://shabari.in) ஏற்றுக் கொள்ளப்படும்.
★ **D.D.** ***மற்றும் மணியார்டர் ஏற்றுக் கொள்ளப்படமாட்டாது.***

our web portal @ **https://shabari.in**

पढ़ो मन भरके

शबरी शिक्षा समाचार

हर घर में हिन्दी, हर मन में हिन्दी
SHABARI SALEM
ज्ञानात् परं सुखम्

वर्ष 28, अंक 10 | मूल्य ₹ 3/- | अक्तूबर - 2026

प्रधान संपादक

एम. वेंकटेश्वरन

संयुक्त संपादक

आर. जयकरन

सहायक संपादक

आर.जे. संतोष कुमार

कार्यालय

Shabari Siksha Samachar

R.O.: 37, First Agraharam, Salem - 636 001.
A.O.: Shabari Palace,
193 & 194, Second Agraharam,
Salem - 636 001. Tamil Nadu. India.
Phone : 94431-65414, 94433-65414
e-mail : shabarisamachar@gmail.com

संस्थापक व प्रकाशक

Published & Owned by M. Sridhar, on behalf of SHABARI SIKSHA SAMACHAR, 37, First Agraharam, Salem - 636 001 & Printed by D. SivaKumar at Sivamurthy Press, 35, A.P. Koil Street, Salem - 636001.

समस्त न्यायिक विवादों के लिए क्षेत्राधिकार सेलम होगा । शबरी शिक्षा समाचार में छपी किसी भी सामग्री से संबंधित पूछताछ व किसी भी प्रकार की कार्यवाही प्रकाशन तिथि से एक माह के अंदर की जा सकती है, बाद में किसी भी पूछताछ पर जवाब हेतु बाध्य नहीं । सभी सामग्री से संपादक सम्मत या सहमत हो यह ज़रूरी नहीं ।

SHABARI BOOK SALES

Whatsapp : 9443165414
Office Phone : 9842765414
Office Phone : 9443365414

VANI VIKAS NUMBER

88703-55599
Office Hrs : 10 AM - 5 PM
88704-55599

अनमोल वचन

दुख भरा शाम

तमिल संत महान तिरुवल्लुवर के अनुसार –

हे शाम ! तुम सिर्फ शाम नहीं हो । अपने प्रेमी से बिछड़ कर जीनेवाली प्रेमिका की जान लेनेवाली अंतिम समय बनकर रही हो । तेरा जय हो ।

मन को मोह लेनेवाले शाम, तुम भी मेरे जैसे प्रकाशहीन दिख रहे हो । तेरा प्रेमी मेरे प्रेमी के जैसे दयाहीन है क्या ?

ओस की बूँद से भरे, मन को मोह लेनेवाला शाम मेरे मन में काम भावना को उत्पन्न करके मुझे दुख देता है ।

प्रेमी के अपने पास नहीं होने पर, यह शाम का समय युद्ध क्षेत्र में जान लेनेवाले शत्रु के समान बहुत ही क्रूर लगने लगता है ।

मैंने अपने सुबह के समय को ऐसा क्या भला कर दिया ? शाम के समय का मैंने क्या बिगाड़ दिया ? दिन का समय सुख देता है और शाम तो बहुत ही दुख देता है ।

मेरे प्रेमी जब मेरे साथ थे तब मुझे बिलकुल पता नहीं था कि यह शाम का समय इतना बुरा होगा कि काम भावना जगा कर मुझे दुख से भर देता है ।

विरह का यह भयंकर रोग सुबह का समय कली सा ठहरता है । दिन में थोड़ा बड़ा होता है और शाम को पूरा खिलकर दुख देता है ।

विरग वेदना से तड़पा देनेवाली इस शाम के समय को गडरिया की बांसुरी की आवाज दूत सा आकर मेरी जान लेनेवाला भयंकर शस्त्र सा बन जाता है ।

मेरी बुद्धि को बिगाड़ देनेवाला यह शाम का समय जब आ जाता है तब यह पूरा नगर प्रकाशमय बनकर विरह के दुख में डूब जाता है ।

मेरे प्रेमी के विरह वेदना से अब तक तड़पनेवाली मेरी जान जो नहीं मिटी थी इस शाम के समय पर उनकी याद में मर मिटने के लिए तैयार हो रही है ।

✍ संपादक की कलम से ...

प्रिय पाठक बन्धुवर, सस्नेह वन्दे ।

मानव के जीवन में प्रकृति का स्थान काफी महत्वपूर्ण है । प्रकृति के साथ जब मानव जीना सीख लेता है तब उसकी जिंदगी आरामदायक ठहरती है । प्रकृति से जब वह दूर जाने लगता है, उसका बुरा असर, उसकी जिंदगी पर जरूर पड़ती है ।

मानव नदी के तट पर जीता था । जंगलों पर विचरता था । पहाड़ों के गुफा में सोता था । बाद में जब वह खेती करने लगा, तब भी प्रकृति के साथ रहा । प्रकृति के साथ उसका जीवन सुखमय था । खाने को बहुत अच्छी चीज मिल जाती थी । जैसे-जैसे वह प्रकृति से दूर जाने लगा रोगों की संख्या भी बढ़ने लगी ।

समय-समय पर बाढ़ तथा अन्य प्राकृतिक आपदाओं से प्रकृति मनुष्य को सबक सिखाती है । बढ़ती गर्मी और बदलते तापमान से मानव वर्ग पीड़ित है । फिर भी इसके बारे में विचार करने का समय या जरूरत मानव को नहीं है ।

नदी नालों को कचरा करने से पानी प्रदूषित है । बढ़ती वाहन तथा अन्य कर्म से हवा प्रदूषण से भरी पड़ी है । उर्वरक और प्लास्टिक से धरती भी दूषित है । इन सबको बदलना मानव का कर्तव्य है ।

''खाना उसी को देना, जो पेड़ पालता है ।

जीना उसी का होना, जो धरती बचाता है ।''

हर घर में कम से कम छोटे-मोटे पौधों को उगाना है । हर गली में यहाँ वृक्ष का होना अत्यंत जरूरी है । हर एक मानव के मन में प्रकृति के प्रति प्यार और उसे बचाने का विचार जरूर बोना है । तभी यह धरती जीने लायक ठहरेगी । मानव मात्र का नहीं सारे जीव-जंतुओं का जीवन जीने योग्य बनेगा ।

जय हिन्द !   जय हिन्दी !!

लगाम

– विद्या सागर आर.जे. संतोष कुमार,
कोवै, तमिलनाडु

पागल हो गई क्या ? क्या बात कर रही है ? तुझे पता भी है क्या, तुम क्या करने जा रही हो ? अरे लोग तेरे मुँह पर थूकेंगे । शादी होने के बाद, दो बच्चे होने के बाद अभी क्या करने जा रही है ? सालों से उसके साथ रही । खुश ही तो थी । अरे तेरे बारे में छोड़ो । बच्चों के बारे में सोचना, दोनों लड़कियाँ हैं । इतनी प्यारी लड़कियों को छोड़कर तुम दूर जाकर रह सकते हो क्या ? अगर पति से गुस्सा करना है तो कर लो । लेकिन सब कुछ छोड़कर दूर जाना ? क्या बाकी रही है ? निरंजना की माँ ज़ोर-ज़ोर से चिल्ला रही थी ।

माँ बात सही है कि मैं आपकी बेटी हूँ । लेकिन यह मत समझना कि मैं अभी भी आपकी छोटी बच्ची हूँ । बाहर से जो भी देख रहे हैं न, उनको क्या पता है कि मैं कैसी हूँ ? मुझ पर जो बीत रहा है वह सिर्फ मैं जानती हूँ । आप मेरे बारे में कभी सोचती नहीं हो । बात सही है कि पति हैं, मेरे दो लड़कियाँ हैं । क्या इस कारण मैं घुट-घुट कर मर जाऊँ ? मैं बस चाह रही हूँ कि थोड़े महीनों के लिए सबसे अलग रहूँ । लोगों को मालूम पड़े कि मेरे बिना जिंदगी कैसे रहेगी ? माँ को देखे बिना ही अपने निश्चय पर अड़ी रहती हुई उत्तर दे रही थी निरंजना ।

अब तो बोलो कि तेरे पति को मना लिया कि नहीं ? उसने भी मान लिया क्या ? आखिर पति तेरा ही है तेरे जैसे ही कुछ न कुछ करता होगा । उसने तुझे रोका नहीं या थप्पड़ मारने की कोशिश नहीं की ? बड़ी गंभीरता से माँ प्रश्न करने लगी ।

क्या बोल सकते हैं ? किस मुँह से बोलेंगे ? रोक तो रहे थे कि मत जाना । लेकिन मैं मानने के लिए तैयार हूँ तब ना ? मैंने कह दिया कि अगर कुछ महीनों के लिए जाने नहीं देंगे तो मैं किसी को, कुछ कहे बिना कहीं चली जाऊँगी । वापस कभी नहीं आऊँगी । उनको मानना पड़ा । और कोई चारा नहीं रहा । गंभीरता के साथ कहने लगी निरंजना ।

बच्चों को क्या बोल रखी हो ? तुझे पता है उनके मन में इस बात का क्या असर पड़ेगा ? सही बात पकड़ ली थी माँ ।

बच्चों को क्या बोलूँ ? उनको सिर्फ यह बोल रखी हूँ कि मुझे कुछ महीने के लिए दूसरे शहर में काम करना पड़ेगा । आप लोगों को नानी के घर से स्कूल जाना पड़ेगा । यहाँ रहना उनको बहुत पसंद है । इसलिए बात मान गए । क्या आपको इसमें कोई दिक्कत है ? अगर है तो बता देना । माँ की आँखों से आँखें मिलाती

हुई बता रही थी निरंजना ।

यह बताओ कि कहाँ जानेवाली हो और कहाँ रहनेवाली हो ? माँ के बोलते बोलते, उसे काट कर कहने लगी निरंजना – मुंबई जा रही हूँ। वहाँ किसी हॉस्टल में रह लूँगी । 6 महीने के लिए कहीं नौकरी कर लूँगी । बच्चों का ख्याल रखना । मैं जल्दी ही वापस आ जाऊँगी । कल सुबह मैं जा रही हूँ वे भी मेरे साथ आनेवाले हैं । सब कुछ तय होने के बाद मैं आपको फोन करके बता दूँगी । कहते–कहते निकल गई निरंजना ।

आख़िरी बार पूछ रहा हूँ ? ऐसे मैंने क्या कर दिया कि दुनिया में कोई नहीं कर रहा है ? मुझे इतनी बड़ी सजा क्यों दे रही है ? क्या हमसे दूर जाने में ही तेरी खुशी है ? अभी बोलो, घर चले जाएँगे । मैं तेरे लिए पूरी तरह बदलने की कोशिश करूँगा ।

पति कुछ कहता रहा, लेकिन निरंजना कहीं और देख रही थी । पुरुष जाति ही ऐसी ही है । अगर पत्नी काम करें तो सब कुछ उसी को करना पड़ेगा । मैं भी कितना कर सकती हूँ ? रसोई, बच्चों को बढ़ाना, पढ़ाना फिर नौकरी भी । पैसे की कमी रही तो माँ–बाप से लेना । अब उसे भुगतने दो ।

नई नौकरी लग गई, हॉस्टल भी ठीक–ठाक लगने लगा । लेकिन निरंजना भी तो माँ है दस दिन बाद उसे बच्चों की याद आने लगी । वह पति को फोन में पूछने लगी – क्या मैं घर वापस आ जाऊँ ? मुझे बच्चों की बहुत याद आ रही है । पति ने कहा – अभी नहीं, तेरा मन जब भरेगा तब सोचा जाएगा ।

पाँच महीने बाद माँ का फोन आया – निरंजना कब घर आ रही हो ? अभी क्या जल्दी है माँ ? अभी तो मेरी जिंदगी आराम से चल रही है । थोड़ा और जीने दो ना मुझे । निरंजना का उत्तर था ।

पारिवारिक जीवन में त्याग भावना की सख्त जरूरी है । एक दूसरे के लिए जीने में ही जीवन की परिपूर्णता है । तुम्हारे पति दुबला–पतला हो चुका है । तेरे बिना जीना उसे अच्छा नहीं लग रहा है । अगर अभी नहीं आएगी तो उसे भी, तेरे बिना जीने की आदत पड़ जाएगी । सुनो बेटी, लगाम अब भी तेरे हाथ में है । देरी करेगी तो तेरे ही जैसे वह भी अपने आप को आज़ाद समझने लगेगा । दिमाग लगाओ चुपचाप घर आ जाओ । कहकर माँ ने फोन पटक दिया ।

निरंजना अब घर वापस जा रही है । एक नई जिंदगी की शुरुआत करने की आशा सहित । जिंदगी और बाकी है और उसे जीने का कोई कारण भी तो जरूर चाहिए ना ?

कौन हो तुम ?

– साहित्य रत्न श्री. जेमि,
कोवै, तमिलनाडु

उड़ते पक्षी को उड़ा देते हो
कढ़ाई में डालकर खा लेते हो
चलनेवाले पक्षी को भी अरे भाई
चाट लेते हो पेट भर लेते हो
जो कुछ मिलता है खा लेते हो
अपना पेट उसे तुम खूब पाल लेते हो ।

जानवरों ने क्या बिगाड़ा था बता तेरे
जान से मार डालते हो फिर खाते हो
कभी–कभी अपने घर में जिसे पालते हो
उसे भी निर्दय हो काटकर खा लेते हो
नदियों को तुम नाले में बदल देते हो
निर्मल को तुम नक्शा क्यों बना देते हो ?

पहाड़ों को काटकर पत्थर बना लेते हो
पत्थरों से इस धरती में मकान बना लेते हो
पेड़ों को काटकर पत्ता तक नहीं बनाते हो
धरती की सुषमा तुम बिगाड़ देते हो
वनस्पतियों में इच्छा अनुसार बदलाव लाते हो
भगवान को मनोरंजन का स्थान बना लेते हो ।

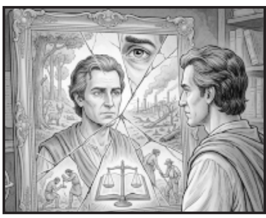

प्रकृति से होड़ लगाकर नियम बदल लेते हो
प्रकृति पर विजय पाने तुम क्यों तड़पते हो ?
कौन हो तुम अब यह तो बता जाने जनता
कितना भी बढ़ पाओगे सब कुछ छोड़ जाओगे
मानवता के बिन अरे बता कभी मानव कहलाओगे ?
महान गुण अपना नहीं पर ही तुम मानव कहलाओगे ।

आराम का नशा

– अधिवक्ता डी.के.कनौजिया,
दिल्ली

आराम ! तुझे वरदान कहें या अभिशाप कहें,
तू मीठा विष है, कैसे तेरा प्रताप कहें ।

तू आया जब जीवन में, श्रम सो गया,
पौरुष का दीप कहीं भीतर खो गया ।
हाथों ने औज़ार छोड़े, तकिया थाम लिया,
मन ने संघर्ष छोड़ा, सुख का नाम लिया ।

तू कहता – कल कर लेना, आज क्यों श्रम करना ।
और मनुष्य सीख गया, बस स्वप्नों में ही जीना ।
धूप से बचा, तो छाँव ने कमज़ोर कर दिया,
संघर्ष से भागा, तो भाग्य पर दोष धर दिया ।

उठ, कर्मभूमि पुकार रही है आज तुझे,
समय चुनौती दे रहा है, ललकार रहा है तुझे ।
पथ कठिन है तो क्या, पदचिह्न वहीं बनेंगे,
जो गिरकर उठेंगे, वही इतिहास रचेंगे ।

आराम करो, पर रण से विमुख मत होना,
थक जाओ तो रुकना, पर रुककर मत सोना ।
जीवन उस दीपक का नाम नहीं, जो बस जलता रहे,
जीवन वह ज्वाला है, जो अँधेरों से लड़ता रहे ।

जिस दिन श्रम से प्रेम करेगा यह मानव,
उस दिन भाग्य भी झुकेगा उसके सम्मुख ।
आराम नहीं, कर्म ही जीवन का अभिमान है,
उठो, तुम्हारे भीतर अभी अग्नि का गान है ।

विश्वात्मा

–श्री. मोनिका डागा 'आनंद',
चेन्नै, तमिलनाडु

बाँधे जाते हैं मन्नतों के धागे,
इस आस में रुका सौभाग्य जागे,
करुण प्रार्थनाएँ परमेश्वर सुन ले,
लाखों की भीड़ में हमें बस वो चुन लें ।

तकनीकी रास्ते बंद जहाँ हो जाते,
याचक मुराद ले प्रभु के द्वार भागते,
अपराधों की क्षमा याचना कर प्रभु से,
होते हल्के चिंताओं के पहाड़ से ।

पीपल नीम कभी वट को सूत बाँधतें,
गहरा विश्वास जगा मन्नतें माँगतें,
अशांत मन ताकि थोड़ा सुकून पा सके,
अतृप्त इच्छाशक्ति सजग हो जाग सके ।

तजकर अवसाद नया संबंध जोड़ते,
आस की दीप्ति से संशय बाँध तोड़ते,
रमें कोशिशों में ये धागा बस दमकें,
फरियाद शीघ्र फलीभूत होकर चमकें ।

ये अटल विश्वास पुष्पित करता फल को,
धागा ये खुशियों से भर देता कल को,
रूकावट मन की है हम यह जानें तो,
''आनंद'' यहीं है भीतर पहचानें तो ।

अनंत भंडार यहाँ लगती कमी हमें,
खोजते चाहतों को हम इसमें उसमें,
गहरा हो जब रिश्ता अंतर्रात्मा से,
अंकुरित तेज होता है विश्वात्मा से ।

उनमें अब दीवार

– श्री. रमेश मनोहरा,
जावरा, म.प्र.

महँगाई ने कर दिया, समाज में बदलाव
आ गया है रिश्तों में, कैसा अब ठहराव
देना है तो दे सदा, सच का ही तू साथ
झूठ के न जोड़े कभी, रमेश उसके हाथ
जिन सवालों पर मचता, ख़ूब सारा बवाल
रह जाते अनुत्तरित ही, सबके सभी सवाल
खतम हुई सद्‌भावना, मिलाते नहीं हाथ
जिस मित्र से की दोस्ती, छोड़ा उसने साथ
रहा था घरों में कभी, सद्‌भाव और प्यार
महँगाई ने खींच दी, उनमें अब दीवार
चल रहा है आज यहाँ, झूठों का अब दौर
मिले नहीं ईमान को, इसीलिए यहाँ ठौर
कड़वी बातें मत करें, हो सब में अब प्यार
तब बनेगा जीवन का, सफल सुखी आधार
लालच पाले मत कभी, होगा जी नुक्सान
ले डूबेगा देख ये, एक दिन ही श्री मान
पैसे पाकर मत करें, इस पर कभी गुमान
खत्म होयेगी एक दिन, रमेश तेरी शान
ऊपर से शरीफ दिखे, भीतर से शैतान
ऐसे में कैसे करें, इंसान की पहचान
बड़ों से भी करें नहीं, देख कोई लिहाज़
संस्कृति भी शरमा गई, यही देखकर आज

रात निखरी चाँद खिला...

– श्री. मनोज
शाह 'मानस',
नई दिल्ली

गगन पे बिखरा चाँद मिला ।
ये रात निखरी, चाँद खिला ।।

चाँद छत पर आए
और निखरी हुई रात हो !
हम कोशिश में हैं
कि इनसे बात हो !!

रात भर इंतजार में बीता,
भरती रही सिंसकी, न चाँद हिला
ये रात निखरी, चाँद खिला
गगन पे बिखरा चाँद मिला ।।

रातों में टूटी छतों से टपकता रहा चाँद !
बारिशों की हरकतें भी करता रहा चाँद !!

ये रात ये चाँद ये तन्हाई और मैं,
शिकायतें, रुसवाई, न चाँद से गिला
ये रात निखरी, चाँद खिला
गगन पे बिखरा चाँद मिला ।।

तुम कहती हो चाँद जैसा साजन होगा !
प्यार मोहब्बत से तेरा सजा दामन होगा !!

एक उम्र लगा समझने में उन्हें,
कुछ-कुछ पागल, कुछ चाँद रंगीला
ये रात निखरी, चाँद खिला
गगन पे बिखरा चाँद मिला ।।

अगर जो आए तुम्हें मेरी याद !
तुम देख लेना प्यारा-सा चाँद !!

ये सोचकर नहीं कि कितनी खूबसूरत है,
ये सोचकर कि कितना तन्हा चाँद मिला
गगन पर बिखरा चाँद मिला
ये रात निखरी, चाँद खिला ।।

तुम्हारा क्या है ?

– श्री. राजेन्द्र लाहिरी,
पमगढ़, छत्तीसगढ़

बुजुर्ग ने बड़े प्यार से पूछा,
बता बेटा, तुम्हारा क्या है ?
या जो मिल रहा वो बिलकुल नया है ?
मैं एकदम से सोच में पड़ गया,
मस्तिष्क अपनी जगह अड़ गया,
फिर मुझे देने लगा संकेत,
बोलते हुए रहना है सचेत,
मेरा तो था सामाजिक तिरस्कार,
मटका, झाड़ू, अस्पृश्यता और अमानवीय व्यवहार,
गुलामी, बंधुआ मजदूरी,
संपत्ति छीन जाने का गम,
मेरा तो था परछाई जो
कइयों पर करता था सितम,
सोच रहा हूँ कि मिला मुझे
ये भरपेट भोजन, सूट, बूट और टाई,
कैसे भूलूँ किसी महापुरुष ने है दिलाई,
विद्यालय का मेज, बेंच,
मोटे बस्ते से भरा किताब,
जो भरता गया मन की उम्मीदें और ख्वाब,
अब है हौसला सब कुछ कर लेने का,
देश की प्रगति में भरपूर योगदान देने का,
सारा कुछ तो है पास जिसमें है
मेरे महापुरुषों का संघर्ष और बलिदान,
बराबरी का हक और संपूर्ण ज्ञान,
अब पास है मेरे आन, बान और शान,
मुझे पूर्ण नागरिक बनाया मेरा संविधान ।

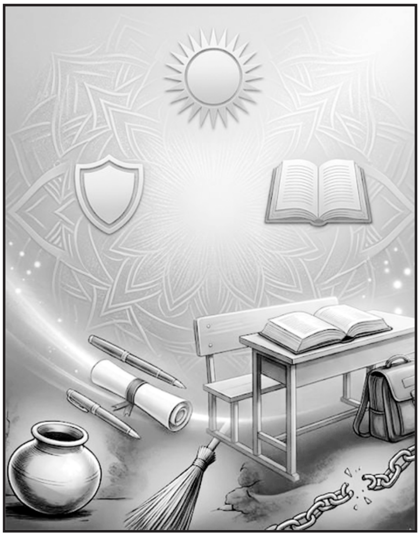

गज़ल

– श्री. विनय साग़र जायसवाल,
बरेली, उ.प्र.

घर भर में रौनक़ हो लेकिन दिल का कमरा एक तरफ़
सब से हँस कर मिलते हैं पर
उनसे मिलना एक तरफ़

उनसे मिलने की जब उठती हूक तो कुछ दिखता ही नहीं
उन लम्हों में जोश के आगे पहरा बहरा एक तरफ़

दुनिया भर की चीज़ें पाकर मन को राहत है फिर भी
उसके पायल की रुनझुन से खुश हो जाना एक तरफ़

घर के हर अहबाब की नज़रों में दिखता है प्यार मगर
उन आँखों से इसको पाना और मुस्काना एक तरफ़

मेरी सालगिरह पर देखो कितने ही तोहफे आये
लेकिन महबूबा का चमके
इन सब में तोहफा एक तरफ़

कहने को सारे शायर ही दोस्त तरन्नुम वाले हैं
उनके तहतुल लफ़्ज़ के आगे सबका लहजा एक तरफ़

महफ़िल में साग़र कहने को बख़्शी है सबने रौनक़
उनके जलवों से होती तो उसका होना एक तरफ़

कर

– श्री. मोहित.जे.
संतोष, कोवै,
तमिलनाडु

यह है एक वर,
और भी है शाप ।
लोग होते बड़े,
इसको भी मानते हैं पाप ।

मज़बूत रहना या मजबूर बनना,
स्वयं है इसका कारण ।
जीत से उड़ना या हार से गिरना,
यही है एक अच्छा उदाहरण ।

सोचने से क्या फ़ायदा ?
इसका जवाब है तेरे हाथ में ।
तेरे साए की तरह तेरे साथ में,
और इनाम मिलेगा उपयोग से ।

अकेला रहना बुरा नहीं,
अकेला ही रहना बुरा है ।
तुम्हारे बारे में है अब सोचना,
कब रुके रहना है और कब सफल
हो बहना है ।

परिश्रम का प्रभाव

– श्री. सूबेदार कृष्णदेव प्रसाद सिंह,
मधुबनी, बिहार

परिश्रम करनेवाले के आगे सर झुकाता यह जमाना,
परिश्रम बना लेता है, सारे संसार को अपना दीवाना ।
इंसान फर्श छोड़कर अर्श पर चला जाता इसके सहारे,
बहुत ही जल्दी छलकता है इससे, ख़ुशी का पैमाना ।
परिश्रम करनेवाले के आगे...

इसके सहारे किसी उजड़े चमन में, आ जाती बहार,
यह नहीं होने देता किसी को, अनहोनी का शिकार ।
एक इंसान मान सम्मान से, कहीं जिंदगी गुजारता,
सारे परिश्रमी लोगों को दुनिया चाहती है अपनाना ।
परिश्रम करनेवाले के आगे...

परिश्रम के साथ होना चाहिए, सकारात्मक विचार,
साधारण मानव गिरा सकता ऊँची से ऊँची दीवार ।
परिस्थितियों से डरकर वह हार नहीं मानता कभी,
परिश्रम करने से कोई भी मौसम होता है सुहाना ।
परिश्रम करनेवाले के आगे...

परिश्रम से खींची जा सकती है पत्थर पर लकीर,
परिश्रम बदल देता है, किसी की बिगड़ी तकदीर ।
परिश्रम अपने लक्ष्य की प्राप्ति हेतु होना चाहिए,
परिश्रमी लोगों को पसंद नहीं आता कोई बहाना ।
परिश्रम करनेवाले के आगे...

बच्चों की फुलवारी

कृष्ण कन्हैया

– श्री. अंजनी कुमार चतुर्वेदी
श्रीकांत, निवाड़ी, म.प्र.

आज अष्टमी आई है। खुशी हर जगह छाई है।
जन्मे हैं मुरली वाले। खुले जेल के तब ताले।
सोए थे प्रहरी सारे। घनी नींद के वे मारे।
उनको पता न चल पाया। मोहन धरती पर आया।
कृष्ण कन्हैया था प्यारा। सारी दुनिया से न्यारा।
अंधकार भीषण लख कर, लिए टोकरी में सिर पर।
थे वसुदेव स्वयं लाए। कृष्ण कन्हैया मुस्काए।
पाँव कृष्ण ने लटकाए। यमुना ने पग छू पाए।
दिया रास्ता जाने को। गोकुल घर पहुँचाने को।
गोकुल जाकर पहुँचाया। उन सबको अचेत पाया।
यशोदा को कान्हा देकर। बदले में कन्या लेकर।
वापिस जेल चले आए। रक्षक जान नहीं पाए।
रख दी वहीं योग माया। कोई जान नहीं पाया।
हुआ सुरक्षित जब कान्हा। माता-पिता ने सुख माना।
कृष्ण कन्हैया आया था। सबने पर्व मनाया था।
जन्म अष्टमी यह प्यारी। मना रही दुनिया सारी।
हाथी घोड़ा पालकी। जय कन्हैया लाल की।
जय बोलो नंदलाल की। सब माया गोपाल की।

मनहरण घनाक्षरी
ईश-भाव

– श्री. राज किशोर वाजपेयी 'अभय',
ग्वालियर, म.प्र.

पुष्प-गंध जब मिली,
दिख गयी खिली कली,
निर्झरों को देख कर,
ईश भाव छा गया।
उत्तुंग श्रृंग श्रंखला,
ऋतु हँसी बसंत पा,
चहक उठे पक्षी भी,
मन खुशी पा गया।
हँसती धरा चपल,
भाव भी लिये नवल,
अनुराग पा धरा का,
नभ भू को पा गया।
प्रकृति है सजी-सजी,
भाव नये रच रही,
चाह लिये घन मन
प्रेम ही मिला गया।।

जिंदगी एक राह, सीखने की चाह

– श्री. दिनेश कुमार,
चेन्नै, तमिलनाडु

प्रयास ऐसा हो कि आपके पास एक दिन बेइंतहा पैसा हो
उड़ान ऐसी कि फर्स से अर्स तक पूछें सभी भाई कैसा हो
हौसला ऐसा की आसमां भी कम लगे कोई देखे तो दम लगे
औकात पूछने वाले को शर्म लगे तुम्हारी हर बात में मर्म लगे ।
भेड़ चाल से जरा हटकर तुम खड़े हो मुसीबतों में डटकर
गिरना संभलना तुम्हें खुद से, तुम गुज़र जाओ हर हद से
समंदर का सीना चीर इतिहास गढ़ो, सबकुछ भूल सिर्फ पढ़ो
ताना मारने वाला भी शर्मिंदा हो, साबित करो तुम जिंदा हो ।
सदा जो भी करो दिल से, डर न लगे तुम्हें किसी बिल से
सफलता सदा वक्त मांगती है, तुम्हारे यकीदे को जाँचती है
पानी को भी बर्फ सा जमा दो, मेहनत से तुम इतना कमा लो
जरूरतों के मोहताज न रहो, करो आज क्या पता कल न रहो ।
पत्थर पर लिखो तकदीर के किस्से, सफलता आए तुम्हारे हिस्से
ये दृढ़ संकल्प, कठिन मेहनत, और निरंतरता, न दिखे आतुरता
पथ की ओर चल मुसाफिर, वरना कर्तव्य विहिन कहलाएगा काफिर
राह कर्मपथ पर कुर्बानी है माँगती, सफलता नाते-रिश्तेदार नहीं जानती ।

धीरे बोल

– श्री. अनंग पाल सिंह भदौरिया 'अनंग',
ग्वालियर, म.प्र.

धीरे बोले आत्मा, सुनो लगाकर ध्यान ।
सुन सकते आवाज़ यह, अपने अंतर कान ।।
अपने अंतर कान, बोलती है सच लेकिन ।
एक-एक व्यवहार, देखती कहती गिन गिन ।।
कह 'अनंग' करजोरि, राज़ अंदर के खोले ।
जो हितकारी सत्य, उसे ही धीरे बोले ।।

भारत

– डॉ. अनन्त कीर्ति वर्द्धन,
मुजफ्फरनगर, उ.प्र.

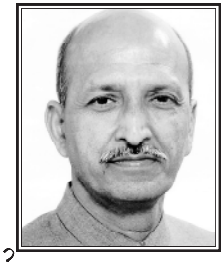

युगों युगों से भारत को, भारत ही सुनते आये हैं,
धर्म ग्रंथों का विश्लेषण, भारत को भारत पाये हैं ।
धर्म सनातन आधार सृष्टि, ब्रह्माण्ड का सार यहाँ,
पंच महाभूतों का संरक्षण, भारत में ही समाये हैं ।

कौन राम थे किसके बेटे, कौन उनके पूर्वज थे,
समय कौन–सा किस राज्य में, जन्म वह पाये थे ?
सभी व्यक्त शास्त्रों में, गंगा औ' भगीरथ के क़िस्से,
पुरखों को मुक्ति खातिर, जो धरा पर गंगा लाये थे ।

कौन पूर्वज ईसा के थे, क्या है कोई इतिहास कहीं,
कौन पूर्वज मूसा के थे, उनकी भी लिखी बात कहीं ?
पुत्र बताते ईसा खुद को, मूसा कहते खुद को दूत,
कान्हा स्वयं ईश्वर रूप, पढ़ी नहीं क्या बात कहीं ?

धर्म सनातन अनन्त काल से, जिसकी कोई थाह नहीं,
जिसमें प्रकृति का संरक्षण, धर्म की कोई थाह नहीं ।
मानवता आधार धर्म का, ईश्वर को पाने की चाह,
अध्यात्म से गूढ़ रहस्य, सप्तलोक रहस्यों की थाह नहीं ।

मुकरियाँ

– श्री. अनिल सिंह 'बच्चू',
कुशीनगर, उ.प्र.

मन–नैन दोनों भीग जाए,
जब भी वो चुपके से आए ।
दिल में चलने लगता चरखा,
ऐ सखि साजन ? ना सखि बरखा ।। 1 ।।

सामने उसके न शर्माऊँ,
बेझिझक नाचूँ और गाऊँ ।
खुद को कर देती हूँ अर्पण,
ऐ सखि साजन ? ना सखि दर्पण ।। 2 ।।

मुखड़ा उसका मन में समाय,
ना देखूँ तो ह्रदय घबराय ।
रूठ जाए दूरी ले बाँध,
ऐ सखि साजन ? नहीं सखि चाँद ।। 3 ।।

देखूँ उसको मैं डर जाऊँ,
घर के कोने में छुप जाऊँ ।
सुडौल है उसका कद काठी,
ऐ सखि साजन ? ना सखि लाठी ।। 4 ।।

ग़ज़ल

– श्री. बलजीत सिंह बेनाम,
हिसार, हरियाणा

तुम्हारी शख़्सियत के मैं बराबर हो नहीं सकता !

तुम्हारी शख़्सियत के मैं बराबर हो नहीं सकता !
ज़्यादा की तमन्ना में हाँ कम भी खो नहीं सकता !
किसी की आबरू पर गर लगे बदनामी के छींटे !
कोई तदबीर कर लो पाक दामन हो नहीं सकता !
उसे मालूम है आँसू अना को जख्म ही देंगे !
बज़ाहिर संगदिल होता है ज़ालिम रो नहीं सकता !
न दे पाया तुम्हें मैं फूल इसका है गिला लेकिन !
तुम्हारी जिन्दगी में खार भी तो बो नहीं सकता !
मोहब्बत की रवायत की खराबी या कहो खूबी !
निगाहें नींद से ओझल हों इन्सान सो नहीं सकता !

क्या जरूरी किसी की चाह करो

क्या जरूरी किसी की चाह करो !
जिन्दगानी में कुछ गुनाह करो !
अपने हिस्से की गर खुशी न मिले !
उम्र भर और को तबाह करो !
इस सदी का यही तो नारा है !
जो भी करना है ख्वामखाह करो !
दिल की दुनिया को छोड़ने वालो !
तुम भी गम से कभी निबाह करो !
मेरी आँखों को अब नहीं आदत !
आँसुओं और कोई राह करो !

आओ मोहन

– डॉ. केवलकृष्ण पाठक,
जींद, हरियाणा

आओ मोहन ! दो सब को दर्शन
जिस से जीवन का हो उद्धार
झूमने लगेगा सबका मन
ज्यूँ ज्यूँ पाप बढ़ते गए, त्यों त्यों जन्म लेते गए
पापियों का नाश करके, भक्तों की रक्षा करते रहे
अब भी आओ शयाम जी मेरे घनीशयाम जी
पापियों का नाश करके आओ भगवान जी
आज के दिन मथुरा में आपने, कंस की जेल में जन्म लिया
पहरेदार सब सो गए, जेल का दरवाजा खुला
वासुदेव के पिता ने आपको ले लिया
गोकुल में नंद की पुत्री के बदले दे दिया
गोकुल में नंदलाल बन, गौओं को चराने लगे
वृंदावन में राधा संग, लीला रास रचाने लगे
बंसी की सुनके तान, मुग्ध राधा जी गाये गान
अब तो आओ जल्दी शयाम, हो पाठक पे मेहरबान

बापू के बंदर

– श्री. भूपसिंह
'भारती',
नारनौल, हरियाणा

कहें तीन बापू के बंदर ।
रहो सदा मर्यादा अंदर ।
सफल सार्थक जीवन का,
संदेश दे रहे हैं सुंदर ।।

बापू जी का अदभुत बंदर,
कहे बोल को, पहले तोलो ।
अपने मुँह पर रखकर हाथ,
कहता कभी बुरा मत बोलो ।।

आँखों पर रखकर के हाथ,
शिक्षा देता अपने आप है ।
बापू जी का बंदर कहता,
बुरा देखना महापाप है ।।

बापू जी का बंदर बोले,
बंद करके ये अपने कान ।
कभी बुरा तुम मत सुनना,
इसका रखना पूरा ध्यान ।।

बुरा न देखो, ना बुरा कहो,
जीवन में कभी न बुरा सुनो ।
कहे 'भारती' सीख यही है,
सही राह अपने आप चुनो ।।

दुनिया

– श्री. भाऊराव महंत,
बालाघाट, म.प्र.

पीड़ा, दया, संवेदना से हीन–सी दुनिया ।
भारत बसाने चल पड़ा है चीन–सी दुनिया ।
मालूम है पानी हमारा प्राण है लेकिन,
ये मछलियाँ भी चाहतीं गो–ग्रीन सी दुनिया ।
पतझड़ चुभाता कील है इन नग्न आँखों को,
पर कुर्सियों से दिख रही है ग्रीन–सी दुनिया ।
बदले हुए अब लग रहे हैं ऐनकों के रंग,
जिनसे दिखाई दे रही रंगीन–सी दुनिया ।
हो पास में जिसके सियासी दम्भ का तावीज़,
है सामने उसके बिछी कालीन–सी दुनिया ।
सबने चढ़ाया सिर पे ऐसे दर्प का पत्थर,
ऊँचे शिखर पे लग रही आसीन–सी दुनिया ।
सोना नहीं चाँदी नहीं हीरा नहीं मोती
मुझको तो सारी लग रही है टीन–सी दुनिया ।

इंद्रबिजय सवैया

– श्री. वंदना ब्रह्मभट्ट 'नेह',
वडोदरा, गुजरात

हे गणनायक विघ्नविनायक, शंकर पुत्र गणेश कहावे ।
पूजन में पहले गणनायक, कर्म समेत सही फल पावे ।
विघ्न हरे अरु दुःख मिटावत, जीवन में सुख शांति बनावे ।
भोजन में प्रिय मोदक है अति, मोदक का सब भोग लगावे ।।

मूषक पे असवार हुए प्रभु , भक्तन के अति नाथ दुलारे ।
रिद्धि व सिद्धि सभी प्रभु देवत, 'नेह' कहे सब जीव उधारे ।
दर्शन पाकर धन्य हुए सुर, दुःख पड़े तब देव पुकारे ।।

प्यार का इंतजार

– श्री. डोली शाह,
हैलाकंदी, असम

आँसुओं से भीगा यह इंतज़ार है,
तुम्हें भी होगा पता, यह प्यार है ।

जुबाँ है खामोश, दिल बेकरार है,
तुम्हारे आने से ही तो बहार है ।
चाँद-तारों-सा यह सफ़र,
कहाँ ठहरा मेरा प्यार है ।

जैसा भी हो रूप-रंग तुम्हारा,
मुझको तो वही स्वीकार है ।
जुड़ गए जो मन के तार,
यही तो प्रेम का चमत्कार है ।

ऐसे ही नहीं मिलता,
हर किसी से मन का विचार है ।
कहीं न कहीं जुड़ा है
तेरा-मेरा कोई तार है ।

यादों के इस समंदर में,
तेरे चेहरे का दीदार है,
तुम वहाँ और मैं यहाँ,
फिर भी दिल में तेरा ही संसार है ।

रातों की खामोशी में,
तेरी आहट का इंतज़ार है,
सूनी राहों पर भी जैसे
तेरे कदमों की पुकार है ।

दूरी चाहे जितनी हो,
दिल को तुझ पर ऐतबार है,
तू पास नहीं, फिर भी लगता
हर पल तू मेरे साथ है ।

तेरी यादों की खुशबू से
महकता मेरा संसार है,
तेरे नाम से जुड़ी हर धड़कन
मेरे दिल का इकरार है ।

मिलना हो या न मिलना,
यह रिश्ता फिर भी खास है,
तेरे मेरे मन का बंधन
शब्दों से भी कुछ पार है ।

आँसुओं से भीगा यह इंतज़ार है,
तुम्हें भी होगा पता, यह प्यार है ।
जुबाँ है खामोश, दिल बेकरार है,
तुम्हारे आने से ही तो बहार है ।

विष और अमृत

– श्री. शुभम पांडेय 'गगन',
अयोध्या, उ.प्र.

कभी सोचा है किसी ने
विष और अमृत
कैसे बनें होगे ?

नदियाँ जो हिमालय
की पवित्र गोद से
उतरती हुई जड़ी बूटियों से लथपथ
गिरती है मैदानी स्थानों पर
जहाँ उनमें भर जाती
आस्था, संस्कृति, सभ्यता
और न जाने कितनी जगहों पर
व्रतों, मन्नतों, यज्ञों का नहान
और पूजा अर्चना का पुण्य
कितनी आस्थाओं का संगम
कितनी जातियों, धर्मों को एकता में
पिरोने का पुण्य
और न जाने कितने खेत, खलिहानों
की उपजायकता
साथ ही
कितने तीर्थों की परिक्रमावाली भूमि
का स्पर्श ।

मगर
साथ में मिलता
कितना पाप, लोगों के पाप जो वो
छोड़ देते डुबकी के साथ नदियों में
कितनी चिताओं और लाशों की गंध
कितने आबाद खलिहानों और घरों
को बंजर करने का पाप
कितने आबाद रिहायशी इलाकों
के मासूम लोगों की हाय, श्राप
न जाने कितनी जानवरों, पक्षियों
के बर्बाद हुए आवास का दर्द
और न जाने कितनी घुली अशुद्धियाँ ।।

ये सब मिलती हैं
विशाल सागर में
एक नहीं, दो नहीं बल्कि
सैकडों नदियाँ, हज़ारों नदियाँ की ।
इन नदियों के साथ इनके पाप-पुण्य
सब के सब घुल जाते विशाल सागर में
और ये पाप-पुण्य ही बनाते विष अमृत ।

ये पुण्य एक जगह एकत्रित होते
जिनसे बनता अमृत जो फल होता
सभी पुण्यों का जो अमर करता ।

इन पापों से बनता
विष जिसकी एक बूँद
हर लेती जीवन ।।

சபரி சிக்ஷா சன்ஸ்தான்

சபரி பேலஸ், 193, 2வது அக்ரஹாரம், சேலம்-1.

✆ 88703-55599 ✆ 88704-55599

Website : https://shabari.in

வாணி விகாஸ் – ஓர் பார்வை .....

உங்களின் கேள்விகளுக்கு இதோ எங்கள் பதில்கள் .....

வாணி விகாஸ் தேர்வுக்குரிய விண்ணப்பப் படிவங்கள் சபரி சிக்ஷா சன்ஸ்தானின் உறுப்பினர்களுக்கு மட்டுமே வழங்கப்படும். வருடாந்திர உறுப்பினர் கட்டணம் ரூ.100/-

வாணி விகாஸ் தேர்வு எதற்காக நடத்தப்படுகிறது ?

வாணி விகாஸ் என்பதின் பொருளிலேயே இந்த வினாவிற்கான விடை இருக்கிறது. ஹிந்தி பேசத் தெரியாதவர்களை ஹிந்தியில் பேசவைப்பதே வாணி விகாஸ் தேர்வின் முதல் நோக்கமாகும்.

வாணி விகாஸ் தேர்வு யாரால் நடத்தப்படுகிறது ?

வாணி விகாஸ் தேர்வு சபரி சிக்ஷா சன்ஸ்தானால் நடத்தப்படுகிறது.

வாணி விகாஸ் தேர்வு வாய்மொழித்தேர்வா அல்லது எழுத்துத்தேர்வா ?

பேச்சாற்றலை வளர்ப்பதே வாணி விகாஸின் கொள்கையாகும், எழுதுகின்ற வேலை இதில் கிடையாது.

வாணி விகாஸ் தேர்வுக்கான குறைந்தபட்ச வயது என்ன ?

எட்டு (8) வயது பூர்த்தியடைந்த அனைவரும் வாணி விகாஸ் தேர்வில் பங்கேற்கலாம். வாணி விகாஸ் தேர்வின் முதல் நிலை தேர்வில் பங்கேற்பவர்கள் விண்ணப்பத்துடன் தங்கள் பிறப்பு சான்றிதழ் நகலினை கட்டாயம் இணைக்க வேண்டும்.

வாணி விகாஸ் தேர்வுக்கான அடிப்படை கல்வித் தகுதி என்ன ?

வாணி விகாஸ் தேர்வுக்கென அடிப்படைக் கல்வித் தகுதி ஏதும் தேவை இல்லை.

வாணி விகாஸ் தேர்வு எந்தெந்த மாதங்களில் நடைபெறுகிறது ?

வாணி விகாஸ் தேர்வு ஜனவரி, ஏப்ரல், ஜூலை மற்றும் அக்டோபர் மாதங்களில் நடைபெறுகிறது.

வாணி விகாஸ் தேர்வுகள் எத்தனை நிலைகளைக் கொண்டது ?

வாணி விகாஸ் தேர்வானது எட்டு நிலைகள் கொண்டது.

வாணி விகாஸ் தேர்விற்கு தனியான பாடப்புத்தகம் உள்ளதா ?

வாணி விகாஸ் எட்டு நிலைகளுக்கும் தனித்தனியே பாட புத்தகங்கள் உள்ளது.

வாணி விகாஸ் தேர்வில் ஒவ்வொரு நிலையாகத் தான் பங்கு பெற முடியுமா ?

ஆம். வாணி விகாஸ் தேர்வில் ஒவ்வொரு நிலையாகத் தான் பங்கு பெற முடியும். ஒரே சமயத்தில் இரண்டு நிலைகளுக்கு விண்ணப்பிக்க இயலாது. நேரடியாக இரண்டாவது அல்லது அதற்கு அடுத்த நிலைக்கோ விண்ணப்பிக்க இயலாது. இரண்டாவது நிலையிலிருந்து எட்டாவது நிலை வரை விண்ணப்பிப்பவர்கள் தாங்கள் தேர்ச்சி பெற்ற முந்தைய நிலையின் 10 இலக்க தேர்வு எண்ணை (10 Digit Exam Register Number) தேர்வு விண்ணப்பத்தில் தெளிவாக எழுதி அனுப்பவேண்டும்.

வாணி விகாஸ் தேர்வு மையங்கள் எங்கெங்கு உள்ளன என்று தெரிந்து கொள்ளலாமா ?

வாணி விகாஸ் தேர்வில் குறைந்தது 30 மாணவர்கள் இருந்தால் உங்கள் இடத்திலேயே தேர்வு மையம் அமைக்கப்படும். அதற்கும் குறைவாக 10 முதல் 29 வரை உள்ள நிலையில் தேர்வுமையக் கட்டணமாக ரூ.500 செலுத்த வேண்டும். **அவ்வாறான நிலையில் மற்றவர்களிடம் பயிலும் ஒரு சில மாணவர்கள் எவ்வித முன்னறிவிப்பின்றி தங்கள் தேர்வு மையத்தில் பங்கேற்பார்கள்.** தேர்வுமையக் கட்டணத்தை எக்காரணத்தைக் கொண்டும் திருப்பித் தர இயலாது.

வாணி விகாஸ் தேர்வுக்கு மதிப்பெண் பட்டியல் மற்றும் சான்றிதழ் உள்ளதா ?

ஆம், உள்ளது. வாணி விகாஸ் தேர்வு முடிந்து 30 நாட்களுக்குள் தேர்வு மதிப்பெண் பட்டியல் மற்றும் 60 நாட்களுக்குள் சான்றிதழ் அனுப்பி வைக்கப்படும். தேர்வு முடிவுகள் https://shabari.in-ல் வெளியிடப்படும்.

வாணி விகாஸ் தேர்வு யாரால் நடத்தப்படும் ?

சபரியால் தேர்ந்தெடுக்கப்பட்ட அனுபவமிக்க ஆசிரியர்களால் தேர்வு நடத்தப்படும்.

இத்தேர்வுக்கான மாதிரி வினாத்தாள் உள்ளதா ?

பாட புத்தகத்தின் கடைசிப்பக்கத்தில் மாதிரி வினாத்தாள் உள்ளது.

வாணி விகாஸ் தேர்வு மாணவர்களுக்கு பயனுள்ளதா ?

ஹிந்தியின் இமாலய வளர்ச்சி மற்றும் பயனுள்ள பயிற்சியில் மாணவர்கள் நிச்சயம் பலன் பெறுவர்.

புத்தகக் கட்டண விவரம் :

புத்தகத்தின் பெயர்	தொகை
வாணி விகாஸ் நிலை-1	₹ 300.00
வாணி விகாஸ் நிலை-2	₹ 310.00
வாணி விகாஸ் நிலை-3	₹ 320.00
வாணி விகாஸ் நிலை-4	₹ 330.00
வாணி விகாஸ் நிலை-5	₹ 340.00
வாணி விகாஸ் நிலை-6	₹ 350.00
வாணி விகாஸ் நிலை-7	₹ 360.00
வாணி விகாஸ் நிலை-8	₹ 370.00

புத்தகக் கட்டணம் செலுத்துவது எப்படி ?

புத்தகக் கட்டணத்தை https://shabari.in என்கிற எங்களது இணையதளத்தின் வாயிலாக மட்டுமே செலுத்தவும்.

महान संत शिव भक्त – तमिल नायनमार

कलिय नायनार

– विद्या सागर आर.जे. संतोष कुमार, कोवै, तमिलनाडु

महादेव की भक्ति मानव का मन जब अपनाता है
महान त्याग करने बलिदान करने तैयार हो जाता है
भक्त प्रिया है भोलेनाथ महान गुणी है महेश्वर महादेव
परीक्षा कभी–कभी करते हैं भक्ति की शक्ति भी दर्शाते हैं
कभी–कभी कठोर परीक्षा के बाद ही वक्त को अपनाते हैं
एक नहीं सिर्फ एक नहीं तिरसठ भक्तों की है कहानी
भक्ति के बल पर भगवान को पाने वाले नायनमार की कहानी
एक दूसरे से भिन्न हाँ बहुत विभिन्न है इन लोगों की कहानी ।

कहानी बहुत ही पुरानी है मनमानी नहीं इतिहास साक्षी है
तोंडैमान राज्य में एक नगर है नाम उसका है तिरुवोट्रियूर
राजाओं से निर्मित एक मंदिर है बहुत ही सुंदर है
आदिपुरेश्वरर मंदिर है आज भी वह अधिकाधिक सुंदर है
महादेव का यह मंदिर बहुत पुराना है मन से माना है
पार्वती महादेवी सहित शिव यहाँ विराजमान है
मंदिर में भक्तों की एक मूर्ति है जो शिव में मिलकर शिव बने
महान पुण्य से मिला था होने हैं, महादेव की महा कृपा ।

कलिय नायर नाम है इनका शिव की सेवा प्रथम काम रहा
चेट्टीपट्टी एक गली थी जिसमें अनेक वणिक रहे तेल का व्यापार करते

तेल का व्यापार करके धन खूब अर्जित करते रहे
इसी वंश में एक घराने में जन्म लिए थे कलिय नायनार
बड़े धनवान थे अच्छे व्यापारी भी ये जरूर थे
सबसे ज्यादा सबसे ज्यादा शिव भक्त ये महान थे
कुल के अनुसार सब कुछ करते तेल का व्यापार भी करते
दिन हो या रात सदा सर्वदा शिव का ही नाम ये भजते ।

मंदिर भर दिया जलाकर मन मानस को भी यह जगह देते
हर शाम को खुद अपने ही हाथ सारे दिया जला देते
मन मस्त हो जाता था मंदिर को चमकते हुए देखकर
मुख मात्रा नहीं आत्मा तक वह दिया प्रकाश भरा देता था
भक्त जो आते थे मंदिर में सर नमाने महादेव के दर्शन करने
दिए के प्रकाश में चमकते मंदिर को देखकर फूल जाते
कभी थकावट नहीं आती थी रुकावट तो पसंद नहीं थी
करते रहे अपना यह काम शिव को मन में बसा कर बिन आराम ।

अक्षय पात्र तो नहीं था किसी के हाथ में तब
जलाने के लिए तेल तो चाहिए था हर रोज अब
कोई तेल लाने या दान करने तैयार नहीं रहे वहाँ पर
अपना सब कुछ भूल कर सब कुछ त्याग कर करते रहे नायनार
धनवान थे खर्च कर कर अब धनवान नहीं रहे
तेल व्यापार का मालिक रहे अब मालिक नहीं रहे
सब कुछ लुट जाने पर भी दिया जलाना बंद नहीं हुआ
तेल व्यापारी के यहाँ काम करके तेल लेकर आए ।

अपनी सारी संपत्ति बेच दिए कुछ बाकी नहीं रहा
अब वे बेचने तैयार हुए अपनी पत्नी को भी लेनेवाला था कहा ।
हर प्रकार से जब थक गए मार्ग ढूंढ कर रुक गए
मन नहीं माना तब भी महान कलिय नायनार का
मंदिर गए अपना गला काट लिए रक्त से दिया जलाने को
हाथ बढ़ाकर रोक लिए थे अपने भक्त को महादेव तब
माता पार्वती सहित दर्शन दिए महादेव वृषभ वाहन पर
शिव पद पाए शिव में मिल पाए भक्त कलिय नायनार ।

खून को तेल बनाने, काटे अभय गर्दन ।
हाथ बढ़ाकर रोक लिए, महादेव देर बिन ।।

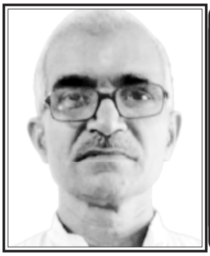

उन संबंधों को बटोर कर क्या होगा

– डॉ. भगवान प्रसाद उपाध्याय,
प्रयागराज, उ.प्र.

उन अनुबंधों को सहेज कर क्या होगा
जिनको बांध नहीं पाया विरही मन
उन संबंधों को बटोर कर क्या होगा
जो दुर्दिन में भी सदा बने रहे अनबन

सुख में साथ दिया सबने जैसे परछाई
दुख में उनको मेरी कुछ याद न आई
बहुत पुकारा उनको मैंने प्रति दिन
कष्ट भरी पाती भी भेजी मैंने अनगिन
उत्तर की बाट जोहता जाने कब आएगा
मन में शंका के बादल मंडराते रहते

जो होगा अच्छा अथवा और बुरा होगा
उन संबंधों को बटोर कर क्या होगा

मैंने दिन बहुत बिताए उनकी ही चिंता में
कर्म हुआ परिभाषित जीवन की गीता में
पर वह मर्म नहीं समझे मेरे मन का
कभी नहीं रख पाए भाव अपने पन का
कैसे बतलाता मैं स्वार्थ रहित सेवा को
कुछ पाने की खातिर खोया है मेवा को

मेरे निर्लिप्त समर्पण का क्या होगा
उन संबंधों को बटोर कर क्या होगा ।

नदी में आकाश

– श्री. राजेन्द्र परदेसी,
लखनऊ, उ.प्र.

सुबह के उजाले में
शब्द मौन हो गए
जब ढलान पर था सूरज
कान में फुसफुसाया–
क्षितिज पर
आहिस्ता–आहिस्ता
सप्तरंगी किरणों से
बन रही है पगडंडी
वृद्ध के थके कंधे पर
किसी ने रखा
विश्वास भरा हाथ
और तभी
उजड़े उपवन में
फूल खिल गए
नदी में उतर आया
आकाश
बिखरने लगी
संवेदनाओं की गंध
चिड़ियों के शोर में
अस्तित्ववान हुआ
खुशगवार मौसम
विश्वास
ढूँढ़ ही लेगा
जीवन
अपना जवाब

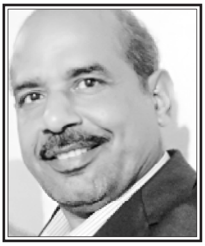

अंखियन ही अंखियन में भोले

– श्री. कार्तिकेय कुमार त्रिपाठी
'राम', इन्दौर, म.प्र.

अंखियन ही अंखियन में भोले,
बातें हमसे करते रहते,
एक–एक बात वो मन की कहते,
फिर खुलकर वो हँसते रहते ।
अंखियन ही अंखियन...
मन का तार जुड़ा होता,
भोले से जज्बातों का,
मन भर बातें करते जाते,
भान नहीं है रातों का ।
अंखियन ही अंखियन...
मन का हाल बेहाल हो जाता,
साथ भोले का जब मिल जाता,
और नहीं कुछ हमको भाता,
सारा दिन यूँ ही ढल जाता ।
अंखियन ही अंखियन...
रैन–बसेरा भोले का है,
हम एक छोटे–से पक्षी,
श्वांसें सब भोले के हाथों,
बात समझ लो तुम पक्की ।
अंखियन ही अंखियन...
आओ पल–पल कर्म तत्व से,
हम अपनी गागर भर लें,
आओ भोले–भंडारी के सारे,
नाम जिह्वा पर हम धर लें ।
अंखियन ही अंखियन...

मिट्टी से भी तू यारी रख

– डॉ. सुबोध शर्मा,
बड़ौदा, गुजरात

मिट्टी से भी तू यारी रख,
दिल में सदा दिलदारी रख ।
किसी को चोट न पहुँचे बातों से,
इतनी–सी समझदारी रख ।।
भीड़ में अपनी पहचान अलग,
अपने अंदर कलाकारी रख ।
किसी की छाया में मत जीना,
खुद तपने की तैयारी रख ।।
पल भर का है जोश जवानी,
कल बुढ़ापे की तैयारी रख ।
समय बदलता रहता हरदम,
मन में थोड़ी समझदारी रख ।।
दिल हर किसी से मिलता नहीं,
फिर भी जुबाँ पर बाते प्यारी रख ।
रिश्ते धन से नहीं, प्रेम से बनते,
मन में सच्ची यारी रख ।।
जीवन की राह कठिन हो चाहे,
चेहरे पर मुस्कान हमेशा रख ।
नेकी कर और भूल जा उसको,
बस इतनी–सी जिम्मेदारी रख ।।
मिट्टी से भी तू यारी रख,
दिल में सदा दिलदारी रख ।।

मातृभूमि

– डॉ. शिप्रा मिश्रा, कोलकाता, प.बं.

तेरी स्मृति में जाग–जाग
तेरी चाहत में रही भाग
कुछ तो संकेत किया होता
कब तक गाऊँ एकांत राग

जिस पर मैंने आँखें खोली
जिस पर मेरी पाँखें डोली
मेरा पहला रुनझुन गूँजा
निकली मेरी पहली बोली

मैंने कुछ बीज लगाए थे
मैंने कुछ फूल उगाए थे
कुछ कंचे दबे–छिपे होंगे
मैंने उम्मीद जगाए थे

तुझ पर मेरा अधिकार नहीं !
अब ये निर्णय स्वीकार नहीं
उस माटी से वंचित होऊँ
फिर कैसे हो प्रतिकार नहीं !

तेरे ऋण भार से विचलित हूँ
तेरी करुणा से विगलित हूँ
मुझ पर निष्ठा का भार धरो
मैं थाती तेरी अतुलित हूँ

मेरी माटी कर्ज चुकाने दे
लुट जाती हूँ लुट जाने दे
भावों के अकथ समंदर में
बह जाती हूँ बह जाने दे

फूल सरीखे बच्चे

– श्री. मीरा सिंह 'मीरा', बक्सर, बिहार

विद्यालय लगता उपवन–सा,
शिक्षक उसके माली ।
बड़े जतन से करते मिल जुल
उपवन की रखवाली ।।

बच्चे जग उपवन की शोभा,
लगते फूल सरीखे ।
जब खुश होते सारे बच्चे
हँसते बाग बगीचे ।।

शिक्षक अपने श्रम से सींचें,
जग उपवन हर प्यारी ।
करना मन से दूर अँधेरा,
पावन जिम्मेदारी ।।

छिपे हुए खरपतवारों को,
शिक्षक ढूँढ़ निकाले ।
आँखों में नव–स्वप्न सजाते,
करते सदा उजाले ।।

सच्चे मन से रही निभाती,
अपनी जिम्मेदारी ।
रहें सुरक्षित सारे बच्चे,
गमके जग फुलवारी ।।

आँसू बना सैलाब

– डॉ. संजय सिंह
'स्वप्निल',
श्रीनिवासपुरी, नई दिल्ली

कण-कण में बिखरा लावण्य,
नदियों का अनुपम उद्गम,
झर-झर झरते झरने,
तुंग शिखरों से लिपटी सफेद चादर,
संपूर्ण गात को ढांके
हरित उतुंग तरुवर ।
बहुत सुकून पाता है,
मानव जिसका सामिप्य पाकर,
वह सीना ताने खड़ा,
स्वाभिमानी हिमपति विशाल,
मानव का आश्रयदाता,
मानव का हितकर, पालनहार ।
प्यार की धीमी गर्माहट पाकर,
पिघल उठती है सफ़ेद चादर,
मचल उठती कल-कल करती,
निकल पड़ती है मानव हित में
सरिता, धरा की धमनियाँ बनकर ।
पर लोलुप इंसान ने,
विकास की अंधी दौड़ में,
किया सबका शोषण,
भरपूर नोच-खसोट कर ।
समीप से देखने की ललक में,
घुसा पर्वत के अंदर
और घुसता चला गया,
कर महीधर को लथपथ ।
अपनी ही नज़रों में
आहत, लज्जित, त्रस्त,
सिसकता खड़ा नंग-धड़ंग
टूटे मन से दरकता पर्वत ।
रो पड़ा फूट-फूटकर,
आँसू निकला सैलाब बनकर,
ले गया सर्वस्व बहाकर,
मचा हाहाकार, कुल लुटाकर ।
स्तब्ध विकास का विज्ञान,
चेताती बेलगाम मानव को,
रुको, जागो, समेट लो अपना पाँव ।
रोक लो अपना महाविनाश,
आओ पर्वत की निर्मल छाँव ।।

डर

– श्री. मदन
सुमित्रा सिंघल,
शिलचर, असम

आदमी सांप से
सांप आदमी से
वो लाचार बीमार लगते हैं
फुँकार मारने से कतराते है
मौन छुपे-छुपे रहते हैं
दोनों डरे-डरे लगते हैं
डर का डर खाये जाता है
सांप बिल में आदमी घर में
ऐसे ही वो एक दिन मर जाते हैं

उस दिन उनको क्या देगा रे ?

– श्री. निलेश जोशी 'विनायका',
पाली, राजस्थान

जीवन की संध्या में तेरे
आ पहुँचेंगे यम, तेरे द्वारे
वैभव सारे धरे रहेंगे
रिश्ते छूटेंगे प्यारे-प्यारे
जतन तुम्हारे सारे हारे
उस दिन उनको क्या देगा रे ?
मोह का मधुर स्पर्श देकर
तेरे भरे प्राण को लेकर
रख लेंगे हाथों पर अपने
खाली हाथ न जाएँगे
एक दिन तो वे आएँगे
उस दिन उनको क्या देगा रे ?
कितने अरि मीत थे तेरे
कितने उजाले घोर अंधेरे
जीवन के सुरभित मग में
संचित तुझसे कर्म ये तेरे
अंतिम क्षण जीवन के तेरे
उस दिन उनको क्या देगा रे ?
धन-धन करते दौड़ लगाई
निधन के द्वारे लेकर आई
अहंकार की चादर ओढ़े
कर ली तुमने सारी कमाई
यम के दूत आएँगे भाई
उस दिन उनको क्या देगा रे ?
संचित था कुछ जो मेरा धन
जीवन भर का था आयोजन
अंतिम दिन क्या करूँगा लेकर
गया कहाँ सब अपनापन
जो है घट में उसका बन
आया है जब अंतिम क्षण
उस दिन उनको क्या देगा रे ?

प्रिये क्या सम्बन्ध हैं

– श्री. देवेन्द्र पाल सिंह 'बर्गली',
नैनीताल, उत्तराखण्ड

मेरा और तुम्हारा
कि मैं खिंचा चला
आता हूँ तुम्हारी तरफ
अकारण ही बरबस
प्रिय तुम्हारी गर्म गर्म
प्रश्वास करती हैं मुझमें
जीवन का संचार
प्रिये क्या मैं निस्वार्थ
ही करता हूँ यह सब
नहीं प्रिय मेरी शीतल
निःश्वास भी करती है
तुम्हारे प्राणों का पोषण
इस प्रकार हम
पूरक हैं एक दूसरे के
पुष्पलता बोली

पीडा का प्रतिशोध

– श्री. पवन कुमार शर्मा,
कौशाम्बी, उ.प्र.

अधिक लोग
सो गये हैं
अपनी पीड़ा में ।
थक गए
यात्रा करके
सो-सो गये
पीड़ा पथ पर ।
ऋतुएँ नहीं
बदलती हैं ।
बदल जाते हैं
प्रति वार ।
क्षण से क्षण
करते हैं
प्रति प्रश्न !
पतझड़ में
छाया की आस
क्षण-क्षण
काट रही है ।
हे पीड़ा !
तुम उठो
उठते-उठते
इतना ऊपर उठना
कि धीरे-से
गुबार बनकर
आसमां की
फैली गोद में
चिरनिद्रित
हो जाना ।
जगने पर
मत खोजना
स्वयं को;
तुम खोजना
आत्मभूत को ।।

घनाक्षरी

– श्री. वसंत,
जमशेदपुर, झारखंड

देश के जो हैं दीवाने,
आजादी के परवाने,
चरणों में शीश हम,
उनके झुकाते हैं ।
गाँधी हो पटेल हो या,
नेता जी सुभाष बोस,
ऐसे देशभक्तों के ही,
गीत हम गाते हैं ।
घर की न चिंता कुछ,
प्राणों की फिकर नहीं,
ऐसे भगत सिंह पे,
कविता बनाते हैं ।
लाल, बाल और पाल,
राजगुरु, सुखदेव,
इनकी चरण-धूल,
माथे पे सजाते हैं ।

धूप-छाँव

– डॉ. शिखा अग्रवाल,
जयपुर, राजस्थान

सरल होना उतना सरल नहीं
जितना कह दिया जाता है ।
सरल कुछ भी तो नहीं,
जन्म से बड़े होने तक
रिश्ते–नाते जटिल,
सच्चे इंसान की
पहचान जटिल ।
मन मस्तिष्क में
भरा घमंड, अहंकार
ऊँच–नीच, तेरा–मेरा
सरल रहने नहीं देता ।
जो सरल हुआ उसे
किनारे कर दिया गया ।
जो सीधा हुआ
जंगल के सीधे पेड़ की तरह
काट दिया गया ।
नदी भी सीधे सरल बहते
रास्ता बदल कर
तबाही ले आती है ।
समुद्र की लहरें भी उछाल लेती
और धरती भी डोल जाती है
शांत हवाएँ भी रौद्र हो जाती हैं ।
सरल उतना ही रहना कि
कोई हक ना छीन ले,
कोई कपट ना कर ले,
अपने अस्तित्व के लिए
कभी सरल से
कठिन भी बन जाना,
क्योंकि जीवन,
धूप और छाँव
दोनों का संगम है

सृजन का मूल

– डॉ. अलका अग्रवाल,
जयपुर, राजस्थान

हरेक घने छायादार,
फलदार विशाल वृक्ष,
पौधे या बेल के
मूल में होता है
एक नन्हा–सा बीज ।
जो दिखाई नहीं देता
परंतु अगर वह
स्वयं को मिटा नहीं देता
....तो होती यह धरा
बंजर और वीरान ।
हरियाली का नहीं होता
कोई नाम निशान ।
आत्म बलिदान, उत्सर्ग ही
आधार है सृजन का ।
बादल के मिट जाने पर ही
तो होती है वर्षा ।

उत्थान हुआ है हिन्दी का ।

– श्री. विमल कुमार,
पूर्णियाँ, बिहार

मुगल, अँग्रेज़ बहुतों आए,
पतन हुआ नहीं हिन्दी का ।
खुसरो, कबीर, रसखान हुए,
तुलसी की भक्ति हिन्दी का ।।

मीरा, सूर, चैतन्य, जायसी,
बिहारी, घनानंद की रचना ।
देशभक्ति, जवानी, मस्ती का,
रहा भूत भविष्य है हिन्दी का ।।

लिपि, व्याकरण, संस्कृति से,
सभी बोली – भाषा को मिलाया ।
भाषाई भेद-भाव न कभी का,
उत्थान हुआ है हिन्दी का ।।

बहुभाषी संस्कृति संस्कार को,
स्वराज मंच पर लाई हिन्दी ।
लगाया नारा आजादी का,
हिन्दुस्तान है हिन्दी का ।।

हिन्दी बहुल बहुभाषी देश में,
देशी-विदेशी सब बोले हिन्दी ।
सम्मान करें विद बहुभाषी का,
दरबार खुला है हिन्दी का ।।

प्रचार-प्रसार व्यापार में हिन्दी,
सुनें विश्व में हिन्दी गाना ।
विश्व में बजता डंका इसी का,
जय गान हो रहा है हिन्दी का ।।

एक पेड़ माँ के नाम

– श्री. रवीन्द्र कुमार राणा,
बुलंदशहर, उ.प्र.

वृक्ष पृथ्वी पर हैं तो जल-जीवन है,
जन-गण-मन को समझाना है ।
आओ हरे-भरे इन पेड़-पौधों से,
इस पावन धरती माँ को सजाना है ।।
आओ हम लें ! एक जरूरी संकल्प,
अपने हाथों से कुछ पौधे लगाना है ।
मातृभूमि को स्वच्छ स्वस्थ बनाकर,
पर्यावरण असंतुलन को मिटाना है ।।
रोपित पौधों को, सब पेड़ बनने तक,
प्रतिदिन करें सिंचित और रखें ध्यान ।
हम करते हैं आपसे कर बद्ध प्रार्थना,
एक पेड़ माँ के नाम चले अभियान ।।
स्वच्छ प्राणवायु-स्वस्थ वातावरण,
स्वच्छ पेयजल हैं, हमारे मित्र महान ।
वृक्ष, नदी, पृथ्वी को पोषित रखेंगे तो,
भविष्य में सुरक्षित होंगे जीव जहान ।।

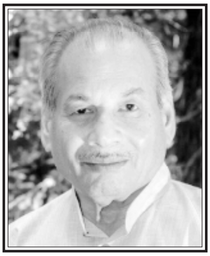

प्रभु की लीला अपरंपार

– विद्यावाचस्पति डॉ. कर्नल आदि शंकर मिश्र 'आदित्य', लखनऊ, उ.प्र.

प्रभु की लीला है अपरंपार,
उसकी महिमा का न कोई पार ।
कण–कण में वह, क्षण–क्षण में वही,
उसकी कृपा से है चलता संसार ।
हम क्यों भटकें, क्यों अभिमान करें,
अपने को कुछ समझ गुमान करें ।
सत्य तो यह है, हे मेरे मन,
हम तो हैं बस शून्य समान ।
शून्य से कुछ छीन नहीं सकता कोई,
शून्य को लूट नहीं सकता कोई ।
जब तक हम शून्य बने रहते हैं,
काल भी हमें छू नहीं सकता कोई ।
इसी शून्य का जरा देखो कमाल,
जब जुड़ जाता किसी अंक के साथ ।
एक के पीछे लगते ही शून्य,
बनता दस, सौ, हजार का साथ ।
यूँ ही जब हम प्रभु चरणों में झुकते,
अपना अस्तित्व मिटा कर रुकते ।
प्रभु का हाथ जब शीश पर आता,
शून्य का मूल्य अनंत हो जाता ।
इसलिए हे मानव, ध्यान धर ले,
ईश्वर पर आस्था, विश्वास कर ले ।
खुद को शून्य समझ कर जी ले,
हर दिल के साथ जुड़ कर जी ले ।
आदित्य मूल्य बढ़ेगा दस गुना,
यह जीवन होगा धन्य गुना ।
जब तू औरों के संग लगेगा,
प्रभु की लीला में ही रमेगा ।

जीत सकते हो...

– श्री. संजय जैन 'बीना', मुंबई, महाराष्ट्र

भाई–बहन का प्यार
अपनो का है साथ ।
तभी तो हमें मिलता है
भरा पूरा संयुक्त परिवार ।।
कभी उनको कभी हमको
उनकी याद आती है ।
दिलके रिश्ते बुलाते हैं ।
अपना प्यार दर्शाते है ।।
आज मिला हूँ वर्षों बाद
एक अजनबी से देखो ।
कैसे रिश्ता बन गया
एकाएक उसके साथ ।।
कल का कल को देखो
कैसे इंतजार रहता है ।
आज होकर भी देखो
कल को ही देख रहा है ।।
जिंदगी की तस्वीरें देखो
कैसे–कैसे बदल रही है ।
अपने पराये हो रहे हैं
पराये अपने बन रहे हैं ।।

हरा भरा मौसम है

– श्री. मुकेश तिरपुड़े,
दुर्ग, छत्तीसगढ़

हरी भरी धरती है
हरा भरा मौसम है
हरे भरे खेतों में
पौधे हैं हरे–हरे ।

धुली हुई धरती है
आसमान धुला हुआ
झिलमिला रही है धूप
मौसम है खुला हुआ ।

पंछियों का कलरव है
आँगन के आसपास
हरे भरे खेतों में
फैल रहा है उजास ।

मनभावन शीतल
हवाओं की लहरों में
शुरू हो गया जीवन
गाँवों में शहरों में ।

खेत लहलहाते हैं
मन को बहलाते हैं
घर भर की आँखों में
सपने हैं भरे–भरे ।

पानी की लहरों पे
खेल रही धूप
बदल रही है धरा
रोज नया रूप ।

धरती पर हरे हरे
धान का गलीचा है
बारिश ने अमृत की
बूँदों को सींचा है ।

नदिया है दर्पण–सी
सोने–सी धूप में
धरती मनमोहक है
मनभावन रूप में ।

राहें अनजानी हैं
रुकना बेईमानी है
चलते हैं जीवन की
राहों पर डरे डरे ।

Revised Book fee for VANI VIKAS Exams
from January-2027 Exams

Vani Vikas Grade-1 ... ₹ 300	Vani Vikas Grade-5 ... ₹ 340
Vani Vikas Grade-2 ... ₹ 310	Vani Vikas Grade-6 ... ₹ 350
Vani Vikas Grade-3 ... ₹ 320	Vani Vikas Grade-7 ... ₹ 360
Vani Vikas Grade-4 ... ₹ 330	Vani Vikas Grade-8 ... ₹ 370

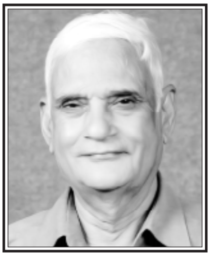

जय हिन्दी, पढ़ो अंग्रेज़ी !

– श्री. उमाकांत भारती, भागलपुर, बिहार

अठहत्तर साल बाद भी
रही मैं अपेक्षित,
संविधान के पन्नों पर
राष्ट्रभाषा लिखी नहीं ।
अँग्रेज़ी रही मेरे आगे–आगे,
बढ़ती रही उसकी लाली,
जो थे पहले माँ–बाप,
हो गए हैं मम्मी–डैडी ।
अँग्रेज़ी स्कूल में पढ़ते बच्चे,
संडे–मंडे जान गए हैं,
भूल गए हैं सोम और बुध,
हिन्दी के अंक भी कहाँ पहचानते हैं ?
हिन्दी रही लेखकों के संग,
सात फेरों का गठबंधन,
पर उनके बच्चे भी दौड़ रहे हैं
अँग्रेज़ी की ओर निरंतर ।
हिन्दी दिवस पर भाषण होंगे,
हिन्दी के जयकारे होंगे,
मंचों पर हिन्दी चमकेगी,
घर में फिर अँग्रेज़ी होगी ।
हिन्दी को राष्ट्रभाषा करनेवाले
नारे खूब लगाते हैं,
अपने बच्चों को अँग्रेज़ी पढ़ाकर
हिन्दी का दर्द जताते हैं ।
हिन्दी बोलना जिनको लगता
अपनी हीनता का कारण,
वे ही हिन्दी की दुर्दशा पर
करते हैं लंबा भाषण ।
हिन्दी बनी दुल्हन आज,
फुटपाथ पर लेटी है,
राजभाषा के भाग्य जागे–
बस इतनी–सी आशा है ।
जय हिन्दी कहने से पहले
हिन्दी को घर में लाएँ,
जिस भाषा को माँ कहते हैं,
उसमें बच्चों से बतियाएँ ।
वरना हर साल हिन्दी दिवस पर
बस इतना ही दोहराएँगे–
हिन्दी हमारी जान है...
और बच्चे अँग्रेज़ी पढ़ाएँगे !

साहित्यकारों से निवेदन है कि वे स्वरचित, अप्रकाशित रचनाएँ मात्र भेजें । अन्य पत्रिकाओं व सोशियल मीडिया या अन्य जगहों पर प्रकाशित रचनाएँ कभी नहीं भेजें ।

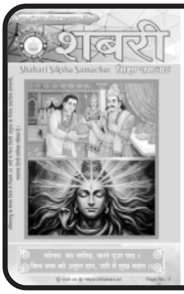

पाठकों के पत्र ...

आपका हिन्दी भाषा के प्रति पूर्ण समर्पण को देखते हुए मैं आपके पूरे हिन्दी भाषा परिवार के सम्मुख नतमस्तक हूँ ।

– श्री. प्रमोद कुमार त्यागी, मेरठ, उ.प्र.

आदरणीय संपादक महोदय जी, शबरी का सितंबर का अंक मिला । साहित्य की सभी विधाओं को समुचित महत्व इस अंक में दिया गया है । हिन्दी भाषा के संवर्धन के लिए पत्रिका का योगदान महत्वपूर्ण है ।

शबरी द्वारा विद्या उत्सव एवं वाणी विकास के आठों स्तरों में उत्तीर्ण छात्रों का सम्मान हिन्दी विकास के क्षेत्र में शबरी परिवार की अनन्य भूमिका के लिए साधुवाद । आपका हिन्दी क्षेत्र में यह प्रयास निश्चित ही दक्षिणी भारत को बाकी हिन्दी प्रदेशों से एक आत्मीय स्नेह का अनुभव कराता है । आपके प्रयासों को बहुत–बहुत बधाई एवं शुभकामनाएँ ।

– श्री. आशीष द्विवेदी साथी, डूंगरपुर, राजस्थान

आदरणीय को सादर प्रणाम, अन्य माह की पत्रिकाओं के समान हीं सितंबर – 2026 की पत्रिका भी लघुकथा, कहानी, विविध विधा की काव्य रचनाओं से परिपूर्ण है । किशोर–किशोरियों के द्वारा रचित रचनाएँ भी सुंदर प्रेरक है ।

शबरी पत्रिका में सबसे बड़ी विशेषता यह नजर आती है कि देवभाषा संस्कृत, तमिल एवं हिन्दी बहुल है ।

हार्दिक बधाई नमन आदरणीय ।

– श्री. विमल कुमार, पूर्णियाँ, बिहार

शबरी शिक्षा समाचार का अंक सितम्बर 2026 प्राप्त हुआ । शबरी परिवार का विद्या–उत्सव शीर्षक से हर घर में हिन्दी हर मन में हिन्दी ध्येय वाक्य बहुत ही सुन्दर लगा । हिन्दी राष्ट्रभाषा के पद पर आसीन होगी साथ ही साथ हिन्दी विश्व भाषा के रूप में राष्ट्र को गौरवान्वित करेगी । ऐसे समय में शबरी शिक्षा समाचार का योगदान स्वर्णिम अक्षरों में उल्लेखनीय होगा ।

– श्री. बाबा कल्पनेश, ऋषिकेश, उत्तराखंड

पत्रिका का प्रत्येक अंक बहुत सुंदर सामग्री से परिपूर्ण होता है । पढ़ने के उपरांत अनेक मित्रों को प्रेषित कर देते हैं । हमारी रचना को स्थान देने के लिये आपका धन्यवाद ।

– डॉ. अनन्त कीर्ति वर्द्धन, मुजफ्फरनगर, उ.प्र.

हिन्दी हितैषी श्रीमान श्रीधर जी का हार्दिक अभिनंदन । हिन्दी संवर्धन की दिशा में शबरी के श्रद्धापूरित अनन्य प्रयत्न का सादर वंदन । अपने ध्येय पथ पर निरंतर गतिशील रहने के लिए शबरी–पत्रिका बधाई की पात्र है । जयहिन्दी जयहिन्द ।

– श्री. नवल किशोर सिंह, तिरुच्ची, तमिलनाडु

एक और शानदार अंक के लिए प्रिय शबरी के संपादक मंडल को अनहद बधाइयाँ । आलेख प्रकाशन हेतु संपादक मंडल का तह–ए–दिल से बहुत–बहुत आभार और ह्रदय से अभिनंदन... कोटिष वंदन ।

– श्री. नलिन खोईवाल, इंदौर, म.प्र.

शबरी पत्रिका के बारे में प्रतिक्रिया

सितंबर 2026 का यह अंक मुख्य रूप से हिन्दी भाषा के प्रचार–प्रसार, प्रांतीय समन्वय, नैतिक मूल्यों और समकालीन–सामाजिक विषयों पर केंद्रित है ।

हिन्दी प्रचार एवं विद्या–उत्सव: पत्रिका का मुख्य उद्देश्य हिन्दीतर राज्यों (विशेषकर दक्षिण भारत) में हिन्दी का प्रसार करना है । इस अंक में 27 सितंबर 2026 को जयराम कॉलेज, सेलम में आयोजित होनेवाले ‘द्वितीय विद्या–

उत्सव एवं वाणी विकास परीक्षा पदवीदान समारोह' की विस्तृत जानकारी दी गई है ।

संपादक की कलम से दक्षिण भारत की नदियों को जोड़ने संबंधी नीतिगत सुझावों और जल संरक्षण के महत्व पर प्रकाश डाला गया है ।

युवा शक्ति व हिन्दी : श्री. नलिन खोईवाल का आलेख ''हिन्दी और युवा शक्ति के बिना आर्थिक सफलता की कल्पना निराधार है'' युवाओं की आर्थिक उन्नति और हिन्दी की भूमिका को रेखांकित करता है । तमिल संत तिरुवल्लुवर के 'तिरुक्कुरळ' के विचारों, 'कण्णदासन के गीतों' और 'तमिल नायन्मार संत-शिव भक्तों' पर लिखे गए लेख अंतर-प्रांतीय सांस्कृतिक सेतु का निर्माण करते हैं ।

'कसूर' (पारिवारिक-सामाजिक तनाव पर आधारित कहानी), 'तराजू का सच', 'महँगाई पर दोहे' और बाल पहेलियाँ पत्रिका को मनोरंजक व बहुआयामी बनाते हैं ।

यह अंक न केवल हिन्दीतर भाषी क्षेत्रों में हिन्दी सीखनेवालों और शिक्षकों का उत्साहवर्धन करता है, बल्कि तमिल और हिन्दी संस्कृति के सुंदर संगम को भी प्रस्तुत करता है । कम मूल्य में उच्च साहित्यिक, सामाजिक व शैक्षणिक सामग्री प्रदान करने के कारण यह अंक अत्यंत पठनीय और संग्रहणीय है ।

– डॉ. सुनील परीट, बेलगांव, कर्नाटक

अत्यंत मनोहारी और शानदार आयोजन आदरणीय...सचमुच प्रतिभाओं को मंच और सम्मान प्रदान करके आपने सुयश स्थापित किया है....समस्त आयोजक वृन्द सज्जनों को कोटिशः शुभकामनाएँ एवं बधाई ।

– श्री. तुषार शर्मा 'नादान', गरियाबंद, छत्तीसगढ़

'हर घर में हिन्दी और हर मन में हिन्दी' इस आदर्श विचार से तमिलनाडु के सेलम स्थित 'शबरी शिक्षा संस्थान' की हिन्दी सेवा अत्यंत अभिनंदनीय है। यह श्रेय संस्थापक श्रीधर जी को जाता है । कार्यक्रम का प्रशंसनीय आयोजन हुआ । हार्दिक बधाई ।

– डॉ. वी. वेंकटेश्वर राव, हैदराबाद, तेलंगाना

आदरणीय संपादक महोदय, आपके हिन्दी के प्रति प्रेम को नमन करता हूँ । एक भव्य कार्यक्रम करके हिन्दी परीक्षा के लिए 500 छात्रों का सम्मान करना बहुत बड़ा योगदान है । आपको बंदन, अभिनंदन, नमन ।

– श्री. सुनील प्रकाश भारद्वाज, लखनऊ, उ.प्र.

श्रीधर जी, आप व शबरी शिक्षा संस्थान के सभी सदस्यों व शिक्षकों को बहुत बधाई व विधा विनय प्रदान करती है और विनय ही विजय का कारण बनती है । अति उत्तम, प्रेरणादायक । प्रभु आप के इस परिश्रम से व भाषा के प्रति प्रेम से सदा आप को सफलता प्रदान करे । सदा प्रगति पथ पर बढ़ते रहें ।

– श्री. मधु खन्ना, ऑस्ट्रेलिया

तिरुवल्लुवर के कामत्थुपाल को इतने विस्तार से हम कहीं नहीं पढ़े होंगे ।
उनके गंभीर विचारों के पीछे ऐसी इक प्रेमभावना कैसी उठी यह आश्चर्य की बात है ।
प्रेमिका की प्रलाप सुनकर स्वयं हम भी दुखित होते हैं ।
यह इक ऐसा अनुभव होता है यों शायद अपने प्रेमी से हम बिछड कर दुखित हो रहे हैं ।
इसे ही शायद प्रेम-पीड़ा कहा जयदेवजी

பாம்புடன் பழகேல் படித்தேன் பழகின பிறகு அது பாம்பென்று அறியும் போது மனம் வேதனைபடும் விலகிவிட நினைத்து நகர்ந்தால் இதயத்தில் ஒரு வலி தோன்றும்.

சிநேகிதன் என்று நினைத்தவனை சினந்து கொத்தும் பாம்பென்றறிய மனம் மறத்து நினைவழியும்.

- ஸ்ரீ. சாரதாம்பாள், சென்னை, தமிழ்நாடு

नवांकुर

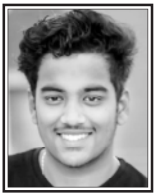

एक दिन

– प्रजित. जे. संतोष,
सी.ऐ.टी. कॉलेज,
कोवै, तमिलनाडु

हर तरफ से चोट मिली,
हर किसी ने मुझे गलत समझा,
कुछ ने हँसकर दिल दुखाया,
कुछ ने चुप रहकर दूरियाँ बनाईं ।
फिर भी दिल में एक बात रही
शायद ये रात हमेशा नहीं रहेगी ।

आज अगर कोई साथ नहीं,
कल शायद कोई हाथ बढ़ाए ।
आज अगर दुनिया बदल गई,
कल शायद दिल भी बदल जाए ।
मैं टूटूँगा नहीं इन बातों से,
मैं हारूँगा नहीं इन रातों से ।
क्योंकि दिल में अब भी विश्वास है,
हर दर्द के बाद आती है राहत की बारिश ।

आज मुझे कोई समझे या ना समझे,
उम्मीद को जाने नहीं दूँगा ।
एक दिन सब कुछ बदल सकता है,
और शायद
वह दिन आज से ही शुरू होता है ।

पतझड़ का बुलावा

– एस. कभिलन,
कर्पगम आकाडमी ऑफ हायर एजुकेशन,
कोवै, तमिलनाडु

जब तेज़ हवा बहने लगती है,
सूखे पत्ते ज़मीन पर गिरते हैं ।
पत्तों की सरसराहट गूंजती है,
पतझड़ के बुलावे की तरह ।

कुछ पत्ते हरे और ताज़ा हैं,
जैसे युवाओं में जोश भरा हो ।
कुछ बूढ़े रंगों से सजे हुए हैं,
पतझड़ का ये नज़ारा प्रेरित करता है ।

पेड़ अपनी पीड़ा को बयां करता है,
जब सारे पत्ते गिरने लगते हैं ।
पत्तों की सरसराहट गूँजती है,
पतझड़ के बुलावे की तरह ।

सच है, पेड़ फिर से उग जाएगा,
नई ऊँचाई हासिल करेगा ।
कुछ नए पत्ते खिलेंगे,
कुछ नए बीज भी बोए जाएँगे ।

पर पेड़ कभी नहीं भुला पाएगा,
ये पतझड़ उसे सदा याद रहेगा ।
पत्तों की सरसराहट गूँजती है,
पतझड़ के बुलावे की तरह ।

– श्रीमती. अलमेलु कृष्णन, चेन्नै, तमिलनाडु

पठितम्, अभिरुचितम्, अनूदितम्

मायाकूपः

कस्मिंश्चित् ग्रामे रामुः सोमुश्च नामकौ द्वौ युवानौ निवसतः स्म । तौ उभावपि आलस्यवन्तौ । किन्तु अन्येषाम् उपकारं कर्तुं समर्थौ आस्ताम् ।

एकदा तौ नारिकेलवन मार्गेण गच्छतः । वृक्षेषु गुच्छशः बहूनि नारिकेलफलानि फलितानि आसन् । उभयोः अपि नारिकेलोदकं पातुम् इच्छा जाता । किन्तु आलस्यात् तौ तत्रैव तूष्णीम् अतिष्ठताम् ।

तत्र रक्षकःनासीत् । अतः तस्मात् एकः वृक्षमारुह्य नारिकेलफलानि दात्रेण छित्त्वा अधः पातयेत्, अपरः तानि एकैकशः संगृह्य गोणिका पुटके स्थापयेत् इति तौ निश्चितवन्तौ ।

रामुः वृक्षम् आरुह्य नारिकेलफलानि दात्रेण छित्त्वा अधः पातयितुम् आरब्धवान् । सोमुश्च तानि एकैकशः संगृह्य पुटके स्थापयितुम् आरब्धवान् । तस्मिन् समये रक्षकः तत्र आगतवान् । सः तौ उभौ अपि कृत्ये प्रवृत्तौ हस्ते एव गृहीत्वा ग्रामाधिकारिणः समीपं नीतवान् ।

तस्मिन् ग्रामे एकः मायाकूपः आसीत् । न्यायविचारणं सर्वदा तस्य कूपस्य उपर्येव क्रियते स्म । यदि कश्चित् मिथ्यां वदेत्, तर्हि तस्य कूपस्य पिधानं स्वयमेव उद्घाट्य तं मनुष्यं कूपे पातयति इति विश्वासः जनानां मध्ये बहुकालात् प्रचलितः आसीत् ।

रामुः सोमुश्च तस्य कूपस्योपरि उपस्थापितौ । न्यायविचारणम् आरब्धम् । न्यायाधीशः तयोः अपराधान् पृष्टवान् ।

रामुः अवदत् ''आर्य, अहं तानि नारिकेलफलानि हस्तेन अपि न अस्पृशम् । पुटकम् अपि न बद्धवान् । एतत् निश्चयेन सत्यम् ।''

सोमुरपि अवदत् ''आर्य, अहं तं वृक्षमपि न स्पृष्टवान् । वृक्षम् आरूढवान् अपि नास्मि, फलानि च न छिन्नवान् । एतत् सत्यम् ।''

कूपस्य पिधानं उद्घाटिष्यते, तौ उभौ अपि निश्चयेन मृत्युम् आपत्स्येते इति बहवः जनाः अमन्यन्त । किन्तु कूपस्य पिधानं न उद्घाटितम् । कस्यापि किमपि न अवगतम् ।

अन्ते तयोः अपराधः सिद्धः न अभवत् । अतः न्यायाधीशः तौ उभौ अपि विमोचितवान् ।

मुक्तौ भूत्वा अपि स्वाभ्यां प्राप्तस्य अपमानस्य विषये लज्जितौ तौ ''इतः परं परिश्रमेणैव जीविष्यावः'' इति निश्चितवन्तौ । ततः प्रभृति तौ सत्येन परिश्रमं कृत्वा जीवितुम् आरब्धवन्तौ ।

भवन्तः चिन्तितवन्तः किम् – ''नारिकेलफलानि अपहृत्य अपि 'न कृतम्' इति मिथ्यां वदद्भ्यां ताभ्यां दण्डः कथं न प्राप्तः ?''

तस्य कारणम् इदम् । वृक्षारूढः रामुः नारिकेलफलानि हस्तेन न अस्पृशत् । सः तानि दात्रेण छित्त्वा अधः एव पातितवान् । सः तानि पुटके अपि न स्थापितवान् । अतः स्वकृत्यानुसारं तस्य वचनं सत्यमेव आसीत् ।

तथैव सोमुः अधः पतितानि नारिकेलफलानि केवलं पुटके स्थापितवान् । सः न वृक्षम् आरूढवान्, न च वृक्षात् फलानि छिन्नवान् । अतः तेन उक्तमपि सत्यमेव आसीत् । तस्मात् मायाकूपेन तमपि न दण्डितम् ।

एवं तौ उभौ अपि स्वस्य चातुर्येण दण्डात् मुक्तौ अभवताम् ।

சமஸ்கிருத மங்கல ஸ்லோகங்கள்
Sanskrit Mangala Shlokas

दीपज्योतिः परब्रह्म दीपज्योतिर्जनार्दनः ।
दीपो हरतु मे पापं दीपज्योतिर्नमोऽस्तु ते ।।

स्वस्तिप्रजाभ्यः परिपालयन्तां न्यायेन मार्गेण महीं महीशाः ।
गोब्राह्मणेभ्यः शुभमस्तु नित्यं लोकाः समस्ताः सुखिनो भवन्तु ।।

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः ।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद्दुःखभाग्भवेत् ।।

अयं निजः परो वेति गणना लघुचेतसाम् ।
उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम् ।।

தமிழமுது – பிழைபடச் சொல்லேல்

– எம். ஸ்ரீதர்,

நிறுவனர் : சபரி சிக்ஷா சன்ஸ்தான், சேலம், தமிழ்நாடு

மனித வாழ்வில் பேச்சுக்கு மதிப்பு மிக்க இடம் இருக்கிறது என்பதை நாம் அனைவரும் நன்கு அறிவோம். மனிதன் தன் எண்ணங்களையும் உணர்ச்சிகளையும் தான் கற்றுக் கொண்ட பல விஷயங்களையும், பேசி மற்றவர்களுக்கு புரிய வைக்கிறான்.

இதயங்களை இணைக்கின்ற சொற்கள், உணர்வுகளையும் உயர்வுகளையும் பறைசாற்றுகின்றன. குடும்பத்தையும் சமூகத்தையும் ஏன் நாடுகளையும் இணைக்கின்ற ஒரு இணையற்ற சக்தியாக மனிதனின் பேச்சாற்றல் விளங்கி வருகிறது.

இனிமை மிகுந்த சொற்கள் இதயங்களை தழுவி பேசுபவருக்கும் கேட்பவருக்கும் மட்டுமல்ல அவர்களை சுற்றி உள்ளவர்களுக்கும் இனிமையை தருகின்றன. கொடுஞ்சொற்கள் கோபப்பட வைத்து பேசுபவரை மட்டுமல்ல அதைக் கேட்பவரின் இதயத்தை சுக்கு நூறாக உடைத்து விடுகின்றன.

அனைத்தையும் ஆய்ந்து அறிந்த ஔவையார் எவ்வாறு பேச வேண்டும் என்று சொல்வதோடு எவ்வாறு பேசக்கூடாது என்பதை மிகத் தெளிவாக கூறுகிறார். குற்றம் உண்டாகும் படி எதையும் பேசக்கூடாது. பேசும் மொழியில் பிழைகள் தோன்றும்படியோ அல்லது மற்றவர்களுக்குத் தீங்கு விளைவிக்கும்படியோ பேசக் கூடாது. பொய் பேசுவதோ, தவறான மற்றும் நீதியற்ற சொற்களைச் சொல்வதோ கூடாது.

நாம் ஒரு கருத்தைச் சொல்லும்போது, அரைகுறையாகத் தெரிந்தவற்றையோ அல்லது தவறான தகவல்களையோ பிறரிடம் கூறக்கூடாது. அது கேட்பவரை தவறான பாதைக்கு வழிநடத்திவிடும். முன்னுக்குப் பின் முரணாகப் பேசக் கூடாது. ஒருமுறை கூறிய கருத்தை, அடுத்த முறை மாற்றிக் கூறி நம் மீதான நம்பகத்தன்மையை இழக்கக் கூடாது.

பேசத் தகுந்த இனிய சொற்கள் நம்மிடம் ஏராளமாக இருக்கும்போதே, அவற்றை விட்டுவிட்டுப் பயனில்லாத கடுமையாகப் பேசுவது, சுவையான கனி இருக்கின்ற போது அதைப் பறித்து உண்ணாமல் பச்சைக் காயைப் பறித்துத் தின்பதற்கு ஒப்பாகும். ஒவ்வொரு வார்த்தையையும் பேசுவதற்கு முன்பு நன்றாக யோசித்துப் பேசும்போது, ஒவ்வொரு நாளும், ஒவ்வொரு மனிதரும் இன்பமுறலாம் என்பதே ஔவையின் அருள்மொழி.

தொடரும்...

அருள் உலா
திருமுறைத் திருத்தல யாத்திரை
திரு அரிசிற்கரைபுத்தூர்

- கயிலைத்திருவடி 'யுவதூத்'

Dr. என். சந்திரசேகர், M.A., B.Ed., Ph.D., சேலம், தமிழ்நாடு

''அகத்து அடிமை செயும் அந்தணன்தான்
அரிசில் புனல் கொண்டுவந்து ஆட்டுகின்றான்
மிகத் தளர்வுயெய்தி குடததையும் நும்முடிமேல்
விழுந்திட்டு நடுங்குதலும் வகுத்து அவனுக்கு
நித்தல் படியும் வரும் என்று ஒரு காசினை
நின்ற நன்றிப் புகழ்த்துணை கைப்புகச்
செய்து உகந்தீர் பொழில் ஆர்
திருப்புத்தூர் புனிதனீரே''

- ஸ்ரீ சுந்தரர் அருளிய 7ஆம் திருமுறைப் பாடல்

''பக்தர் தம் கஷ்டம் பொறான் பரமன்'' என்று வரிகளுக்கு விளக்கமாய் அமைந்துள்ளது தற்போது அழகாபுத்தூர் என்று அழைக்கப்படும் திரு அரிசிற்கரைபுத்தூர் தலவரலாறு. இந்தத் திருத்தலத்தை பெரியபுராணத்தில் ஸ்ரீ சேக்கிழார் பெருமான் செருவிளப்புத்தூர் என்று அழைக்கின்றார்.

அருள் வரலாறு :

முன்பொரு சமயம் திருக்கயிலையில் ஸ்கந்தகிரியில் திருமுருகன் தவழ்ந்து விளையாடிய தருணம், அவரை வணங்காது சென்றார் பிரம்மன். அவரை அழைத்துப் படைக்கும் கடவுள் என்ற பெரும் பொறுப்பில் உள்ள அவரிடம் ''பிரணவமாகிய ஓம்'' மந்திரப் பொருள் கேட்டார். பிரம்மன் பதில் கூறாமல் விழித்தார். ஆகையால் ஸ்ரீமுருகன் பிரம்மாவை சிறையில் அடைத்தார்.

பின்பு தமது தந்தை ஸ்ரீ சிவபெருமானின் அருளாணைக்கு இணங்கி பிரம்மாவை சிறையில் இருந்து விடுவித்தார். அதுசமயம் ஸ்ரீ சிவபெருமான் முருகப்பெருமானிடம், பெரியவர்கள் கவனக்குறைவான ஏதாவது தவறு செய்தாலும் அதனை அவர்களிடம் பணிவாகக் கூறவேண்டுமே தவிர, அவர்களைச் சிறுவர்கள் கண்டிக்கவோ, தண்டிக்கவோ கூடாது என்று அன்புடன் கூறினார்.

இதனால் மனம் வருந்திய ஸ்ரீ முருகப்பெருமான் இந்தத் தலம் வந்து ஈசனை வணங்கி பிராயஷ்சித்தமாக மன அமைதி பெற்றார்.

படிக்காசு நாதர் :

அறுபத்து மூன்று நாயன்மார்களில் ஸ்ரீ புகழ்த்துணை நாயனார் திருஅவதாரம் செய்த திருத்தலம் இந்த திரு அரிசிற்கரைபுத்தூர் ஆகும்.

ஸ்ரீ புகழ்த்துணையார் அனுதினமும் ஸ்ரீ சிவபெருமானின் அபிஷேகத்திற்கு நீர் எடுத்துவந்து தமது திருக்கரத்தாலேயே அபிஷேக ஆராதனைகள் செய்யும் கைங்கர்யம் செய்துவந்தார்.

ஒரு சமயம் மழை பொய்த்தது, எங்கும் வறட்சி, நீர்நிலைகள் வறண்டன. ஆனாலும் பலமைல்தூரம் நடந்து சென்று தண்ணீர் கொணர்ந்து ஈசனுக்கு அபிஷேகம் செய்யும் திருத்தொண்டை தொடர்ந்து செய்துவந்தார் ஸ்ரீ நாயனார்.

வறட்சி காரணமாக அவ்வூர் மக்கள் பசியால் வாடினர். ஸ்ரீ நாயன்மாரும் அதற்கு விதிவிலக்கு அல்ல.

பலநாள் பட்டினி இருப்பினும் பரமேஷ்வரனுக்கு அபிஷேகம் செய்யும் கைங்கர்யத்தை தொடர்ந்து செய்து வந்தார் ஸ்ரீபுகழ்த்துணையார்.

இவ்வாறு இருக்கும் போது பட்டினியுடன் பலமைல் நடந்து தண்ணீர் கொண்டுவந்த நாயனார் பசிமயக்கம் காரணமாக சிவலிங்கத்திற்கு அபிஷேகம் செய்யும்போது கால்கள் தளர கையில் இருந்த தண்ணீர்க்குடத்தை சிவலிங்கம் மீதே நழுவவிட்டு மயங்கிவிழுந்தார்.

பரமன் பொறுப்பாரோ ! உடனே ஸ்ரீ நாயனார் கனவில் தோன்றி பஞ்சம் தீரும் வரை அவருக்கு தினம் ஒரு தங்கக்காசு தருவதாகக் கூறி மறைந்தார்.

மயக்கம் தெளிந்த ஸ்ரீ புகழ்துணையார் ஸ்ரீ சர்வேஷ்வரனின் அளப்பரிய கருணையை எண்ணி ஆனந்தக் கண்ணீர்விட்டார்.

ஐயன் அருளிய படிக்காசு மூலம் தாம் மட்டும் மகிழ்ச்சியாக உண்டு உறங்கி வாழாமல் பக்தர்களுக்கும் உணவு படைத்து மகிழ்ந்தார்.

ஸ்ரீ புகழ்த்துணை நாயனாருக்குப் படிக்காசு வழங்கியருளிய காரணத்தால் இத்தலத்து ஈசன் ஸ்ரீ படிக்காசுநாதர் எனவும் போற்றி துதிக்கப்படுகின்றார்.

சிறப்புக்கள் :

1. இந்தத் திருத்தலம் ஸ்ரீ கோச்செங்கட்சோழனால் திருப்பணி செய்விக்கப்பட்ட திவ்ய திருப்பதியாகும்.

2. சோழர்காலக் கல்வெட்டுகள் இத்திருக்கோயிலில் காணப்படுவது, திருக்கோயிலின் தொன்மைக்கும் பழமைக்கும் சாக்ஷி.
3. இத்தலத்து முருகர் ''ஸ்ரீ கல்யாண சுந்தர ஷண்முக சுப்ரமண்யர்'' என்று அழைக்கப்படுகின்றார்.
4. ஸ்ரீமுருகன் பின்புறம் உள்ள திருவாசி (ப்ரபாவளி) ப்ரணவ ஓம் வடிவில் உள்ளது சிறப்பு.
5. திருமணத் தடை நீங்க, புத்ரதோஷம் அகல ஸ்ரீமுருகருக்கு பால்பாயச நிவேதன வழிபாடு நடைபெறுகிறது.

ஸ்ரீ ஸ்வாமி – ஸ்ரீ அம்பாள் :

இறைவன்	: ஸ்ரீ சொர்ணபுரீஷ்வரர்
இறைவி	: ஸ்ரீ சிவாம்பிகை (எ) ஸ்ரீ சௌந்தர்ய நாயகி
தலமரம்	: வில்வம்
தீர்த்தம்	: அரிகில நதி
வழிபட்டு அருள் பெற்றோர்	: ஸ்ரீ முருகன், ஸ்ரீ புகழ்த்துணை நாயனார் முதலானோர்

அருட்பதிகங்கள் :

மூவர் முதலிகள் எனப்படும் ஸ்ரீ ஞானசம்பந்தர், ஸ்ரீ நாவுக்கரசர், ஸ்ரீ சுந்தரர் ஆகிய மூவராலும் பாடல் பெற்ற சிறப்பிற்கு உரியது இத்திருத்தலம்.

தரிசன காலம் :

காலை 06.00 மணி – பகல் 12.00 மணி வரை
மாலை 04.00 மணி – இரவு 08.30 மணி வரை

தொடர்பு முகவரி :

ஸ்ரீ சொர்ணபுரீஷ்வரர் திருக்கோயில்,
அழகாபுத்தூர்,
கும்பகோணம் – 612401.
தஞ்சாவூர் மாவட்டம்.

தொடர்புத் தொலைபேசி எண் :

0434-2466939

அமைவிடம் :

அழகாபுத்தூர் என்று தற்போது மக்கள் வழக்கில் உள்ள காவிரி தென்கரை தேவார பாடல் பெற்ற தலங்களுள் 66-ஆவது திவ்ய தலமாக வரும் திரு அரிசிற்கரைபுத்தூர்

அருட்தலமானது தஞ்சாவூர் மாவட்டம், கும்பகோணத்தில் இருந்து நாச்சியார் கோயில் செல்லும் வழியில் சுமார் 7 கி.மீ. தொலைவில் அமைந்துள்ளது.

ஸ்ரீ சிவாம்பிகா ஸமேத
ஸ்ரீ சொர்ணபுரீஷ்வர பரப்ரஹ்மமணே நம:
... அருள் உலா தொடர்கிறது.

Scan this QR code to follow
SHABARI BOOK SALES, SALEM
WHATSAPP CHANNEL

Scan this QR code to follow
SHABARI SIKSHA SANSTHAN, SALEM
WHATSAPP CHANNEL

இணைந்திடுங்கள்... இணைத்திடுங்கள் இதயங்களை...

அன்பார்ந்த வாசகர்களே,

உள்ளத்தையும் எண்ணத்தையும் உயர்த்தும் படைப்புகளுடன் ஹிந்தி, தமிழ், சமஸ்கிருதம் ஆகிய மும்மொழிகளில் வருகிறது சபரி சிக்ஷா சமாச்சார் பத்திரிக்கை. ஆண்டுச் சந்தா ₹100/- செலுத்தி இந்த இலக்கியப் பயணத்தில் நீங்களும் இணையலாம். நண்பர்களுக்கும், உறவினர்களுக்கும், மாணவர்களுக்கும் இந்த நல்ல பத்திரிக்கையை பரிசளியுங்கள்.

SHABARI SIKSHA SANSTHAN,
194, 2nd Agraharam, SALEM-636001. TN
✆ 88703-55599 ✆ 8870455599
Website : https://shabari.in

SHABARI SIKSHA SAMACHAR, SALEM

Form IV (See Rule 8)

Statement about ownership and other particulars about Shabari Siksha Samachar (according to Form IV. Rule 8 circulated by the Registrar of Newspaper for India).

1. Place of Publication	:	Salem - 636 001
2. Periodicity of its Publication	:	Monthly
3. Printer's Name	:	D. Sivakumar
Nationality	:	Indian
Address	:	Sivamurthy Press, 35, A.P. Koil Street, Salem - 636 001.
4. Publisher's Name	:	M. Sridhar
Nationality	:	Indian
Address	:	37, First Agraharam, Salem - 636 001.
5. Editor's Name	:	M. Venkateswaran
Nationality	:	Indian
Address	:	197, Second Agraharam, Salem - 636 001.
6. Name & Address of the individuals who own the newspaper and partners or shareholders holding more than 1 % of the capital	:	M. Sridhar Owner & Publisher 37, First Agraharam, Salem - 636 001.

I, M. Sridhar, hereby declare the particulars given above are true to the best of my knowledge and belief.

Sd.

Date : 05.10.2026. **M. Sridhar**

Signature of the Publisher

2nd

Siksha

-2026

Salem

शबरी शिक्षा

शिक्षा संस्थान,

शिक्षा संस्थान,

Posted at Salem HPO 636 001. October-2026

Published on 5th October-2026

Posted on 6th & 7th of every month. R.N.I. No. : TNMUL/1999/00402

Postal Reg. No. : TN/WR/SLM(E)/121/2024-2026

Licenced to post without prepayment. TN/WR/SLM(E)/121/WPP/2024-2026

कृपया सभी पत्र व्यवहार में अपनी सदस्यता संख्या का अवश्य उल्लेख करें ।

அனைத்து கடித போக்குவரத்துகளிலும் தங்களுடைய உறுப்பினர் எண்ணை தவறாமல் குறிப்பிடவும்.

Please quote your subscription number in all correspondences.

If undelivered please return to

Shabari Siksha Samachar,

A.O. 194, Second Agraharam, Salem - 636 001.

To

DON'T TEAR THE LABEL IF UNDELIVERED